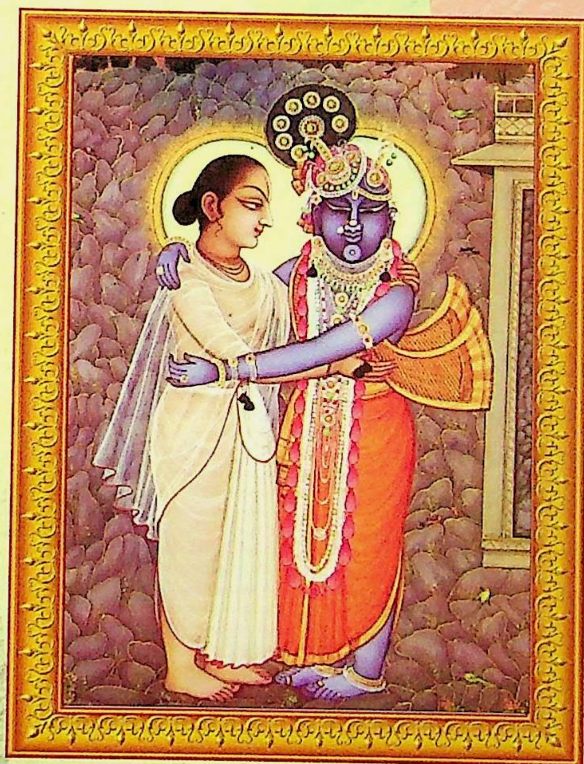
श्रीजी दर्शन



(श्री वल्लभाचार्य से प्रथम मिलन)

जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्य वंशावतंस
आचार्य वर्य गोस्वामि तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेश जी) महाराज



नाथद्वारा

जन्मतिथि फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत २००६

प्राकट्य
२४ फरवरी १९५०

श्रीजी दर्शन

गो. ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज श्री की आज्ञा से प्रकाशित

:: सम्पादक एवं संशोधक ::
त्रिपाठी यदुनन्दन श्री नारायणजी शास्त्री
अध्यक्ष
विद्या-विभाग

:: प्रकाशक ::
जगदीश चन्द्र हेडा
मुख्य निष्पादन अधिकारी
मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

:: प्राप्ति स्थान ::
श्री गोवर्द्धन पुस्तकालय, मोती महल चौक
श्रीनाथजी मन्दिर नाथद्वारा (राज.) पिन 313301

तृतीय संस्करण-२०७३ न्योछावर राशि २५/-

प्रति-२०००

मेरा भी अनुरोध......

आनन्दकन्द नन्दनन्दन प्रभु श्रीनाथजी के चरणानुरागी भक्तों का कोई ओर-छोर नहीं है। प्रभु भक्ति के उद्रेक से वे यहां आते हैं और अपना तन-मन न्योछावर कर प्रभु की विविध सेवाएं करते हुए अपने जीवन प्राण श्री गिरि-गोवर्द्धनधर श्रीनाथजी को लाड़ लड़ा रहे हैं। अत्यन्त उत्साह और उमंग से वे यहां आते हैं, तब प्रभु के मंगलकारी दर्शनानन्तर प्रभु से संबंधित अनेक सेवाओं एवं स्थलों की जानकारी की जिज्ञासा उन्हें होती है। वह होना ही चाहिये जिससे प्रेम किया जाता है उसकी समग्र चीजें प्यारी ही लगती है। हमारा यह मार्ग ही अनुग्रह मार्ग है-प्रेम मार्ग है।

अतः आगत भगवद्भक्त वैष्णवों की जानकारी हेतु अनेक विषयों को स्पर्श करती हुई यह पुस्तिका "श्रीजी दर्शन" आपके कर-कमलों में आ रही है। मैं मानता हूं कि इसके प्रकाशन में त्वरा हुई है फिर भी अनेक तथ्यों से आपको इसमें परिचय मिलेगा ही।

जगदीश चन्द्र हेडा
मुख्य निष्पादन अधिकारी
मंदिर मण्डल, नाथद्वारा

अनुक्रमणिका

1. नाथद्वारा मंदिर मण्डल

श्रीनाथजी मन्दिर, नाथद्वारा के सुचारू प्रशासन एवं प्रबन्धीय व्यवस्था के लिए नाथद्वारा मन्दिर अधिनियम, 1959 के अन्तर्गत मन्दिर मण्डल नाथद्वारा का गठन महामहिम राज्यपाल महोदय की अनुमति दि. 25/03/1959 की अनुपालना में विधि एवं न्याय विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा किया गया। मन्दिर मण्डल की संपूर्ण व्यवस्थाएँ नाथद्वारा मन्दिर अधिनियम, 1959 तथा इसके तहत बने नाथद्वारा मन्दिर नियम, 1973 के तहत की जाती है।

मूल उद्देश्य :

1. मन्दिर के संधारण, दिन–प्रतिदिन के सेवा–कार्यों एवं अन्य पुण्यार्थ कार्यों को सम्पन्न करवाना।
2. मन्दिर में आने वाले दर्शनार्थियों/तीर्थयात्रियों की सुख–सुविधा का ध्यान रखना।
3. मन्दिर की समस्त चल–अचल संपत्तियाँ, चाहे वे किसी के द्वारा समर्पित की गई हों, अथवा–किसी धार्मिक सद्भावी या पुण्यार्थ प्रयोजन के लिये बोर्ड के अधीन रखी हों, अथवा मन्दिर को प्राप्त चढ़ावे या भेंट में प्राप्त हो, की व्यवस्था एवं रख–रखाव।

नाथद्वारा मन्दिर मण्डल निगम निकाय है। पूज्यपाद् गोस्वामी तिलकायत श्री १०८ श्रीराकेशजी महाराज इसके अध्यक्ष पद पर आसीन हैं। वर्तमान बोर्ड में महाराजश्री सहित कुल 13 सदस्य है जिनमें महाराष्ट्र से 3, राजस्थान से 3 गुजरात से 3 (1 सौराष्ट्र से) व 2 अन्य प्रान्तों का प्रतिनिधित्व करते है। जिला कलक्टर पदेन सदस्य होता है।



2. सेवा विधान

पुष्टि सम्प्रदाय में सेवा विधान (सेवा प्रणालिका) ब्रजजनों की प्रीति के आधार पर रची गई है। श्रीमहाप्रभु जी ने गोपीजनों को पुष्टिमार्ग का गुरु कहा है। गोपीजनों ने अपने प्रिय श्रीकृष्ण से निश्छल, निष्कपट, निस्वार्थ भाव से प्रेम किया। इस भाव भरे प्रेम को श्रीमहाप्रभुजी एवं श्री गुसांईजी ने सेवा में गूंथ लिया। सुन्दर व उत्तम सेवामार्ग, स्नेहपूर्वक प्रभु की सेवा का मार्ग ही पुष्टिसम्प्रदाय में सेवा विधान प्रणालिका का पर्याय बन गया।

इसमें सेवा ही महत्वपूर्ण है। श्रीमद् वल्लभाचार्यजी ने श्रीमद्भागवत के अनुसार, परब्रह्म श्रीकृष्ण की अष्टयाम सेवा प्रचलित की। पुष्टिसेवा में अष्टयाम सेवा (प्रातः मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग तथा सायंकालीन सेवा–उत्थापन, भोग, आरती, शयन) के स्वरूप का आधार श्रीमद् भागवत ही है। इस सेवा भावना की मूल भूमि भगवदाश्रय है, इस भाव के बिना सेवा सिद्ध नहीं होती। प्रभु का अनुग्रह होने पर भाव अंकुरित होता है।

श्रीमद् वल्लभाचार्यजी ने आराध्य पूर्णपुरुषोत्तम साक्षात् श्रीकृष्ण स्वरूप श्रीनाथजी का सर्वप्रथम सेवा विधान नंदालय की भावना से अष्टयाम रूप में प्रारम्भ किया। आगे आपके द्वितीय पुत्र गुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी ने सेवा विधान, मण्डान में विस्तृत रूप प्रसारित किया। आज सम्पूर्ण भारत ही नहीं, विदेशों में भी पुष्टिमार्गीय सेवा विधि का प्रचार–प्रसार हो रहा है।

यहां राग–भोग, श्रृंगार द्वारा अद्भुत सेवा क्रम स्थापित किया हुआ है। श्रीठाकुरजी को जगाने से लेकर पौढ़ाने तक सम्पूर्ण सेवा नंदालय में श्रीयशोदाजी ने, ब्रजभक्तों ने तथा बाल सखाओं ने जो लाड प्यार प्रभु के लिए उड़ेला वही लाड़ प्यार हमारी सेवा की प्रणालिका है। सेवा में बालभाव एवं किशोर भाव सम्मिलित है। सेवा क्रम में ऋतुओं के अनुसार राग–भोग–श्रृंगार में परिवर्तन का विशेष ध्यान रखा जाता है।



3. श्रीनाथजी का प्राकट्य एवं नवीन मंदिर में पाट बैठाना

गोवर्द्धनधरण श्रीनाथजी के प्राकट्य वार्ता के अनुसार गिरिराज पर्वत पर एक देव स्वरूप का प्राकट्य एवं आविर्भाव हुआ।

इस स्वरूप विषयक की चर्चा भागवतकार महर्षि वेद व्यास ने की है। श्रीकृष्ण जब इन्द्र कोप मर्दन करने के लिए गोवर्द्धन पूजा कराते हैं, नाना प्रकार के व्यंजन बनाकर श्रीगिरिराज को आरोगने की प्रार्थना की जाती है तब गिरिराजजी सबके देखते दिव्य स्वरूप धारण कर लेते हैं और सबकी सेवाएं अंगीकार करते हैं। वेदव्यास के अनुसार श्रीकृष्ण स्वयं ही एक तरफ पूजा करके दूसरी तरफ स्वयं ही गिरिराज स्वरूप से गो–ग्वालों द्वारा समर्पित सामग्री स्वीकार कर ब्रजजनों की सुरक्षा का विश्वास दिलाते हैं। पूजा के पश्चात् वह अलौकिक स्वरूप गिरिराजजी में ही अन्तर्हित हो जाता है जो पुनः वहां मंगल स्वरूप श्रावण कृष्णा तीज रविवार विक्रमाब्द 1466 को प्रातःकाल की मांगलिक वेला में सूर्योदय की प्रथम रश्मि के साथ ही गिरिराजजी पर प्रकट होता है। इसके बाद श्रावण सुदी नागपंचमी को अपनी गाय ढूंढ़ते समय ब्रजवासी को सर्वप्रथम इन्हीं भगवान् की उर्ध्वभुजा के दर्शन होते हैं। दर्शन मात्र से ब्रजवासी मन में विचार कर निश्चित कर लेते हैं कि यह वही देवदमन प्रभु है जिसने सात दिन गोवर्द्धन पर्वत उठाकर हमारी रक्षा की थी।

सभी ब्रजवासियों ने उर्ध्वभुजा के प्राकट्य से आनन्दित हो अपने ही इष्टदेव देवदेवन, इन्द्रदमन, नागदमन का पुनः आविर्भाव होना मान, पूजा अर्चना, आराधना–सेवा आरम्भ कर दी और सतत् 69 वर्ष तक उर्ध्वभुजा की पूजा सेवा करते रहे। इसके पश्चात् संवत 1535 की वैशाख कृष्ण एकादशी के दिन मुखारविन्द का प्राकट्य हुआ। यह संयोग की बात है कि इसी दिन मध्यप्रदेश के चम्पारण्य में महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी का भी प्राकट्य हुआ।

मुखारविन्द का दर्शन कर वहां के सद्दूपाण्डे, माणिक चन्द्र आदि ब्रजवासी अत्यन्त प्रसन्न हुए, उन्होंने अनेक उत्सव मनाये। वे इस स्वरूप पर दुग्धादि चढ़ाकर पूजा–अर्चना करने लगे। यह स्थल जतीपुरा के नाम से जाना जाने लगा।

फाल्गुन शुक्ल 11 गुरूवार वि.सं. 1549 के दिन श्रीनाथजी के सम्पूर्ण विग्रह का प्राकट्य हुआ। आपने झारखण्ड में महाप्रभुजी श्रीवल्लभाचार्यजी को गोवर्द्धन पर्वत आने एवं सेवा प्रणालीका निश्चित करने की आज्ञा दी। श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा पाकर आन्योर ग्राम पधारे और सद्दूपाण्डे के चबूतरे पर बिराजे। कहा जाता है उसी समय श्रीकृष्ण स्वरूप श्रीनाथजी गिरिराज की कंदरा से बाहर आकर दृष्टिगोचर हुए। श्रीवल्लभाचार्यजी व श्रीनाथजी का हृदयालिंगन मिलन हुआ। ब्रजवासी जय–जयकार करने लगे। गौओं ने रंभाना शुरू कर दिया। उन्हें इतनी प्रसन्नता हुई कि उनके स्तनों से दूध की धाराएं बह निकलीं।

कुछ समय के बाद आचार्य श्री ने वहां एक छोटा–सा मंदिर बनवाकर भगवद् स्वरूप को उसमें विराजमान किया। अपने हाथ

से मोर–चन्द्रिका, गुंजा–माला धारण करा सफेद टिपारे का शृंगार किया फिर अपने हाथों से सामग्री सिद्ध कर श्रीगोवर्द्धनधरण को भोग आरोगाया। अभी तक श्रीठाकुरजी को दूध, दही, माखन का ही भोग धराया जाता रहा था। अन्न से बनी सामग्री का भोग श्रीमहाप्रभुजी के हाथों से आरोगाया गया था।

आचार्यश्री ने श्रीगोवर्द्धननाथजी की बाल सेवा की सुमधुर परिपाटी को ही महत्व दिया तथा श्रीनाथजी के नाम से प्रसिद्ध किया। साथ ही ब्रजवासियों को कृष्णाश्रय का मंत्र प्रदान किया। रामदास चौहान को सेवा की विधि सुपुर्द की। सद्दूपाण्डे, मानिकचन्द पाण्डे, कुम्भनदास, अच्युतदास आदि सम्पूर्ण श्रद्धा से सेवा में सहयोग देने लगे। सेवा विधि एवं सेवा कार्य इन सभी को सौंप कर श्रीवल्लभाचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा के लिए पधार गये।

सं. 1558 में श्रीवल्लभाचार्यजी पुनः ब्रज पधारे तो उन्होंने अम्बाला के एक धनाढ्य भक्त पूरणमल खत्री से श्रीनाथजी का मंदिर बनाने का आग्रह किया किन्तु वह सुल्तानी शासन के आतंक से अत्यन्त भयभीत था। अतः इच्छा होते हुए वे पूरणमल तैयार नहीं हुआ। उधर श्रीवल्लभाचार्यजी अपने दृढ़ संकल्प से आगरा से हीरामणि शिल्पी को बुला शिखर के हवेलीनुमा मंदिर का नक्शा बनवाया, ताकि सुल्तानी कारिन्दे उसे सरलता से पहचान न सके और मन्दिर को कोई हानि न पहुंचे। प्रभु प्रेरणा, आज्ञा से उसी नक्शे के अनुसार मंदिर का निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया, किन्तु बादशाह सिकन्दर लोदी को इसकी भनक लग गई। उसके कारिन्दों ने विनिर्मित मन्दिर ध्वस्त कर दिया। सद्दूपाण्डे,

मानिकचंद पाण्डे और रामदास आदि ब्रजवासियों ने म्लेच्छों के अत्याचारों से बचाने की दृष्टि से मिलकर प्रभु श्रीनाथजी को गिरिराज से हटाकर 'टोड़ का घना' नामक निर्जन, दुर्गम एवं बीहड़ वन में स्थापित करा दिया। वहां अनेकानेक कठिनाइयों को सहन करते हुए सम्पूर्ण श्रद्धा प्रेम–भाव से श्रीनाथजी की सेवा करते रहे। जब म्लेच्छों का आतंक कम हुआ, तब श्रीनाथजी को पुनः गोवर्द्धन लौटा लाये। सं. 1576 में सिकन्दर का देहावसान हो गया, तब ब्रजवासियों ने शांति की सांस ली। म्लेच्छों के आतंक से ब्रज प्रदेश मुक्त हो गया। इस परिस्थिति का लाभ उठाकर श्रीवल्लभाचार्यजी ने पूरणमल खत्री से, विध्वंसित मंदिर को पुनः निर्माण करने का आग्रह किया। संवत् 1576 में मंदिर का निर्माण कार्य पूरा हो गया। उस समय श्रीवल्लभाचार्यजी अड़ेल में बिराज रहे थे। वे ब्रज पधारे। संवत् 1576 की वैशाख शुक्ल तृतीया को श्रीनाथजी को नये मंदिर में प्रतिष्ठित किया। प्रभु श्रीनाथजी का वैभव उस समय तक बहुत बढ़ गया था।

दूधघर की सामग्री सिद्ध करने के लिए सद्दूपाण्डे आदि ब्रजवासियों ने अनेक गायें भेंट की। प्रभु सेवा का विस्तार भी बहुत अधिक हो गया। सूरदास संवत् 1566 में आचार्यजी से दीक्षित हो चुके थे। सूरदास को प्रमुख कीर्तनकार बनाकर कुम्भनदास को उनके साथ लगाया तथा कृष्णदास अधिकारी बनाये गये। संवत् 1577 में परमानंददास भी आचार्यजी से दीक्षित हुए और सभी श्रीनाथजी के सम्मुख अष्टयाम में कीर्तन करने लगे।



4. माला बोलना व शंखनाद का भाव

नाथद्वारा आने के बाद तत्कालीन गोस्वामी श्री ने बनास नदी के मार्ग की घाटी पर एक मंदिर बनवाकर शिवजी को प्रतिष्ठित किया। तभी से राजभोग के समय बोलने वाली माला के बाद आपको श्रीजी के दर्शन हेतु आवाज दी जाती है। उसमें मुख्य भावना यह है कि आप भक्तों में अग्रगण्य होने से सर्वप्रथम शिवजी श्रीजी मंदिर में पहुंचते हैं एवं डोलतिबारी के अन्तर्गत गोल देहली पर बैठकर श्रीनाथजी के दर्शन करते हैं। गोल देहली शिव स्थान माना जाता है। माला बोलने का भाव यह है कि भगवान् जब जतीपुरा गोवर्धन पर बिराजते थे तब प्रभु का फूल घर चन्द्र सरोवर पर था। राजभोग में धराने वाली माला हेतु बुलन्द आवाज दी जाती थी। सेवा क्रम भावनायुक्त है।

शंखनाद का भाव – श्रीनाथजी एवं नवनीत प्रिय जी को छोड़कर अन्य घरों में नंदालय की भावना स्वरूप श्रीठाकुरजी को जगाने हेतु तीन बार घंटी बजाई जाती है इसका भाव यह है कि ब्रज में तीन प्रकार की गायें हैं – राजसी, तामसी और सात्विकी। उनके गले में छोटी–छोटी घंटियां हैं, गायों के चलने के स्वर से श्री प्रभु को जगाया जाता है तथा निकुंज में श्रीस्वामिनीजी के लीला सम्बन्धी सुख सारो **'तमचर पक्षी'** श्रीस्वामिनीजी द्वारा पाला हुआ है, ये समय–समय जगाने हेतु **'टहल में रहता'** तमचर पक्षी लीला का पक्षी है।

एक समय श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के संग लीला रस में थे, उस समय रात्रि की पिछली प्रहर का समय शेष था, परन्तु बिना बिचारे वह बोल उठा इससे श्रीठाकुरजी चौंक उठे कि भोर हो गई तमचर बोल उठा हैं अब मैं जाता हूँ। प्रभु के ये वचन सुन श्रीस्वामिनीजी के हृदय में विरह का तीव्र तीर–सा लगा एवं वे मूर्छित हो गई। ठाकुरजी ने अपने अधरामृत से उन्हें चैतन्य किया तथा अनेक मधुर वार्ता कर प्रसन्न किया। तब स्वामिनीजी प्रसन्न हुई। जब उन्हें तमचर बिना समय, बिना बिचारे बोलने का पता चला तो उन्होंने तमचर पर क्रोध कर उसे श्राप दिया कि तू सदा आसुर के घर में रहेगा, वह उसी समय निकुंज से गिरा।

"इसके भय से सुख सारो वहां जावे तो स्वामिनी अप्रसन्न होवे सुख सारो आधि दैविक स्वरूप है।" मधुर स्वर तो ललिताजी बिशाखाजी के कंठ की नाद का है जो जगाते हैं। तब ललिताजी आदि ने संयुक्त बीन बजाई एवं इसके बाद शंख की तरह कंठ से स्वर गुंजायमान किया। यह सखी सहचरी तीन प्रकार की मानी है इसलिए श्रीठाकुरजी को जगाने हेतु शंखनाद किया जाता है। प्रभु को शंख बहुत प्रिय है। **"पांचजन्यं ऋषीकेशः"** शंख ध्वनि **'निर्दानव दर्प हंता'** 'शंख की ध्वनि सुनते ही काम क्रोधादि भाग जाते हैं और सेवक गण तन्मय होकर अपनी–अपनी सेवा में लग जाते हैं। तीन बार शंख बजाने की भावना–सात्विक, राजस एवं तामस ध्वनि तत्परता व उत्साह की प्रतीक मानी गई है।



5. श्री यमुनाजी का महत्व

वल्लभ सम्प्रदाय में श्रीयमुनाजी का अत्यधिक महत्व है। श्रीयमुनाजी भगवान् श्रीकृष्ण की नित्य लीला स्थली की सहचरी है जो निरन्तर साथ रहती है। एतदर्थ भगवान् का स्मरण कराने वाली है और भाव वृद्धि करती है।

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी की यमुनाजी के प्रति प्रभु तुल्य मान्यता है। इस कारण सभी वल्लभ सम्प्रदाय के भक्त कवियों ने यमुनाजी के पुण्य प्रताप का स्मरण किया है। श्रीकृष्ण की नित्य सेवा में सेवक भगवत् मंदिर में प्रवेश का अधिकारी ही तब बनता है जब वह यमुना का स्मरण कर ले। आचार्य प्रवर महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी ने अपने **षोड़श ग्रंथों में यमुनाष्टक** ग्रंथ को प्रथम स्थान दिया है। इस ग्रंथ स्त्रोत में आचार्यश्री ने श्रीयमुनाजी के स्वरूप के माहात्म्य का प्रतिपादन किया है। श्रीकृष्ण की कृपा शक्ति श्रीयमुनाजी के विविध आधिभौतिक (जलरूप), आध्यात्मिक (शक्तिरूप) एवं आधिदैविक (स्वामिनीजी स्वरूप) स्वरूपों में श्रीयमुनाजी की स्तुति का माहात्म्य आत्मसात करने एवं वैष्णवों (जीवों) पर कृपा करने हेतु महाप्रभुजी ने श्रीयमुनाजी के आठ ऐश्वर्यों का प्रतिपादन किया है।



6. पुष्टि (अनुग्रह) मार्ग

'पुष्टिमार्ग' वैष्णव जन समाज को ही नहीं बल्कि समस्त समाज को धारण तथा पोषण करने वाला प्रशस्त पथ है। इस पथ पर चलने का सिद्धान्त है – शुद्ध अद्वैत। अर्थात् शुद्ध एकता का स्थापन करना। समाज को एक रूप में धारण तथा पोषण करने वाले सबल मार्ग को ही पुष्टिमार्ग के नाम से जाना जाता है। इस हेतु श्रीवल्लभाचार्यजी प्रयत्नशील थे। पुष्टि का अर्थ भगवत अनुग्रह या पोषण है। श्रीमद्भागवत में **'पोषणं तदनुग्रहः'** का सिद्धान्त दिया है। निरन्तर स्मरण, सेवा व समर्पण से ही यह कृपा प्राप्त हो सकती है। जिसकी जितनी दृढ़ आसक्ति होगी वही प्रभु का अनुग्रह पा सकेगा।

पुष्टिमार्ग शुद्धाद्वैत मार्ग के स्वरूप का दर्शन कराता है, ज्ञान प्रदान करता है। पुष्टिमार्ग में परब्रह्म ये सत्–चित् और आनन्द को प्रदर्शित कराता है। ब्रह्म शब्द का अर्थ है – जो बृहत् हो, व्यापक हो, जहां मानव के अज्ञान से बनाए गए समस्त मानव के भेद, ऊँच–नीच का भाव नष्ट हो। जिसके संबंध से प्रत्येक मानव व्यापकता के द्वारा एकता स्थापित करे और समाज तथा राष्ट्र को स्थिरता सबलतापूर्वक प्रदान करे। ऐसे ही एकता के सिद्धान्त वाले मार्ग का दिग्दर्शन हमें पुष्टिमार्ग के आचार्यों द्वारा हुआ है।



7. पुष्टिमार्ग एवं उसके सिद्धान्त

पुष्टिमार्ग नाम की प्रेरणा श्रीमद्वल्लभाचार्यजी को श्रीमद् भागवत से प्राप्त हुई थी। पुष्टि का कार्य–पोषण है। जिसका अर्थ अनुग्रह या कृपा है।

श्रीमद् भागवत के द्वितीय स्कन्ध के दशम अध्याय के चतुर्थ श्लोक में **पुष्टि पोषणं** का विवेचन किया है वहां 'पोषणं तद्नुग्रहः' भगवान् के अनुग्रह से जीव का पोषण बतलाया है। इसी श्लोकांश के आधार पर श्रीवल्लभाचार्यजी ने अपने मत को पुष्टिमार्ग कहा है। इस मार्ग में किसी भी प्रकार की कामना, लिप्सा, इच्छापूर्ति के लिए भगवान् की साधना नहीं की जाती। इसमें पूजा, कर्म–काण्ड नहीं होता। इसमें सेवा ही सर्वोपरि मानी गई।

सांसारिक दुःखों, क्लेशों और त्रिविध संतापों इत्यादि की निवृत्ति और ब्रह्म का बोध कराने के लिए लौकिक संसार में रहकर भी इन माया–मोहादि से दूर रहने के लिए आचार्यश्री ने पुष्टिमार्ग की स्थापना की। इसमें स्वरूप सेवा में रहकर तनुजा–वित्तजा व मानसी सेवा को महत्व दिया है।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी ने श्रीमद् भागवत की दशम स्कन्ध की लीला के स्वरूप व नंदालय की भावना के आधार पर श्रीनाथजी की अष्टयाम सेवा पद्धति को माना, क्योंकि श्रीनाथजी ही श्रीकृष्ण स्वरूप है। प्रभु का विशेष अनुग्रह होने पर जीव को पुष्टि भक्ति प्राप्त होती है। यह प्रभु कृपा का दिव्य क्षेत्र है, जिसे भगवत् कृपा रूप पुष्टि भक्ति प्राप्त हो जाती है, उसके जीवन में अन्य कोई कामना शेष नहीं रह जाती, केवल एक ही कामना भावना के स्वरूप की प्राप्ति रहती है।

८. पुष्टिमार्ग-सिद्धान्त (या शुद्धाद्वैत) पद्धति पूर्णतया बाल मनोवैज्ञानिक

भारत में मत–मतान्तरों का प्रचार प्रसार युग धर्मानुसार होता रहा है परन्तु जब एक ऐसा समय आया कि धर्म में पाखण्ड फैलने लगा तथा भक्ति मार्ग की अक्षुण्ण धारा में व्यवधान होने लगा तब ऐसी परिस्थितियों में, सही मार्ग प्रदर्शक के रूप में श्रीमद्वल्लभाचार्यजी का प्राकट्य विक्रम संवत् 1535, वैशाख कृष्ण 11 को चम्पारण्य में हुआ।

मुस्लिम राज्याधिकार से आक्रान्त भारतीय जनता को धार्मिक अवलम्बन देकर आपने निर्भय बना दिया और शुद्ध ब्रह्मवाद का प्रतिपादन करते हुए समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपना कर शुद्धाद्वैत दर्शन की स्थापना की।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी के सिद्धान्तों की दिव्यता व वैज्ञानिकता ने दार्शनिक जगत में एक क्रान्ति की स्थिति को उत्पन्न कर दिया तथा भ्रान्तियों एवं रूढ़िवादिता को नष्ट कर एक ऐसा सरल व सुदृढ़ मार्ग प्रशस्त किया जिसे पुष्टिमार्ग के नाम से जाना जाता है।

आपने स्थान–स्थान पर शास्त्रार्थ भी किये और राजा कृष्णदेवराय की सभा में तो आपकी विचारधारा ने समस्त अन्य सिद्धान्तवादियों को परास्त कर दिया और आपको **'महाप्रभु'** की उपाधि से अलंकृत किया गया। आपने अपने सिद्धान्तों को अणु भाष्य, तत्वदीप निबन्ध, श्रीसुबोधिनीजी, षोड़श ग्रन्थ आदि में निरूपित किया तथा शुद्धाद्वैत

दर्शनानुसार ब्रह्म, जीव, जगत, माया, आविर्भाव–तिरोभाव, ब्रह्म सम्बन्ध परिणामवाद आदि सिद्धान्तों को वैज्ञानिकता व प्रमाणिकता की कसौटी पर कस कर विवेचन प्रस्तुत किया जो संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है –

ब्रह्म का स्वरूप : ब्रह्म सच्चिदानंद अर्थात् सत्, चित् एवं आनन्दस्वरूप है जो षड़गुण सम्पन्न, लीलावपुधारी, आनन्दमूर्ति सर्वत्र व्यापक, अविरूद्ध धर्माश्रयी व असंख्य विभूति रूप है। श्रीकृष्ण व ब्रह्म में पार्थक्य नहीं है। वही आधिदैविक रूप से परब्रह्म पुरुषोत्तम, आध्यात्मिक स्वरूप से अक्षरब्रह्म तथा आधिभौतिक रूप से जगत का सृष्टिकर्ता है। श्रीकृष्ण का श्रीगोवर्धनधारी स्वरूप ही श्रीनाथजी है।

जीव का स्वरूप : ब्रह्मसूत्रानुसार भगवान् के ऐश्वर्यादि गुणों के तिरोधान से जीव भाव की स्थिति होती है। जीव तो ब्रह्म का ही स्वांश है और नित्य है। जीव अत्यन्त सूक्ष्म चिदंश है। आनन्द के तिरोभाव से जीव में ब्रह्म के सदृश गुण नहीं रहते हैं।

जगत : श्रीवल्लभ ने जगत को सत्य माना है और कहा है कि 'ब्रह्म सत्यम् जगत् अपि सत्यम्।' जगत की उत्पति नहीं होती और नाश भी नहीं होता वरन् आविर्भाव–तिरोभाव होता है। ब्रह्म जगत का कारण है और कार्य कारण से भिन्न नहीं होता है, अत जगत ब्रह्म से अभिन्न है।

श्रीवल्लभ ने जगत् और संसार को पर्यायवाची नहीं माना है। जगत् ब्रह्मात्मक है और संसार अविद्या के द्वारा मिथ्या प्रतीत होने वाली अहंता–ममता का रूप है।

माया : ब्रह्म की सर्वभवन सामर्थ्यरूपा शक्ति ही माया है। माया ब्रह्म से अभिन्न है तथा विद्या और अविद्या को उत्पन्न करने वाली है।

आविर्भाव–तिरोभाव : श्रीवल्लभ दर्शन की सबसे विलक्षण विशेषता आविर्भाव–तिरोभाव ब्रह्म की शक्ति है जो मोहित करती है। अनुभव का विषय होना आविर्भाव है और अनुभव का विषय न होना तिरोभाव है।

अविकृत परिणामवाद : श्रीमहाप्रभुजी ने परिणाम में विकार होना ग्राह्य नहीं माना है। परिणाम दो प्रकार का होता है – (1) कारण में विकार, जैसे दूध का दही बन जाना, इसमें पुनः दही से दूध नहीं हो सकता। (2) कारण में किसी प्रकार का विकार नहीं होना, जैसे स्वर्ण से कुण्डल आदि का बनना जो पुनः स्वर्ण में घटित होते हैं, केवल रूप से नाम बदल गया है। वस्तुतः कारण रूप में वह सोना ही है। ठीक इसी प्रकार से जगत् ब्रह्म का अविकृत परिणाम है।

ब्रह्म सम्बन्ध : ब्रह्मवाद का प्रबल सिद्धान्त ब्रह्म सम्बन्ध अर्थात् आत्म निवेदन है। यही पुष्टिमार्गीय दीक्षा है। जीव अनादिकाल से, अनेक दोषों के फल स्वरूप प्रभु से विलग रहा है और गुरु के द्वारा आत्मनिवेदन करा कर उसे पुनः शरणस्थ किया जाता है।

जीव प्रभु का है, क्योंकि वह ब्रह्म का ही अंश है, अंश–अंशाशी भाव सम्बन्ध ही ब्रह्म सम्बन्ध है। ब्रह्म सम्बन्ध का अर्थ है – हे प्रभो ! मैं आपका दास हूँ, सर्वस्व आपका है। "साधन विहीन मुझे सेवा में अंगीकृत कीजिये, मैं तो आप ही का हूँ।" इसमें समर्पित वस्तु का त्याग आवश्यक है। पुष्टिभक्ति की प्राप्ति जीव को होती है। जीव तीव्र विरह का अनुभव करता है। यही पूर्ण शरणागति पुष्टि–भक्ति की विशेषता है।

पुष्टिमार्ग को कृपामार्ग भी कहा जाता है। जीव अपने साधनों से भक्ति नहीं प्राप्त कर सकता वह तो प्रभु कृपा से ही प्राप्त होती है।

९. श्रीनाथजी का नाथद्वारा आगमन

भारत के मुगलकालीन शासक बाबर से लेकर औरंगजेब तक का इतिहास पुष्टि सम्प्रदाय के इतिहास के समानान्तर यात्रा करता चलता रहा है। सम्राट अकबर ने पुष्टि सम्प्रदाय की भावनाओं को स्वीकार किया था। गुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी के समय सम्राट की बेगम बीबी ताज तो श्रीनाथजी की परम भक्त थी तथा तानसेन, बीरबल, टोडरमल आदि पुष्टिमार्ग के उपासक भक्त रहे थे। इसी काल में कई मुसलमान कवि भक्त रसखान, मीर अहमद इत्यादि ब्रज साहित्य और श्रीकृष्ण के भक्त रहे हैं। किन्तु मुगल शासन के पतनोन्मुखी शासकों में औरंगजेब अत्यन्त क्रूर एवं असहिष्णु था। धर्म के नाम पर जजिया कर अथवा मृत्युदण्ड देना उसका लक्ष्य रहा था। हिन्दू धर्मानुयायियों का धर्म परिवर्तन कराना उसका लक्ष्य रहा था। हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियों को तोड़ने का कठोर आदेश आये दिन दिया करता था। उसकी आज्ञा की अनुपालना करने वाले दुष्ट अनुचर भी हिन्दूओं के सेव्य–विग्रहों को खण्डित करने लगे। मूर्ति पूजा के विरोध में इस दुष्ट शासक की वक्रदृष्टि ब्रज में विराजमान श्रीगोवर्द्धनगिरि पर स्थित श्रीनाथजी पर भी पड़ी।

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी के परम आराध्य ब्रजजनों के प्रिय श्रीनाथजी के विग्रह की सुरक्षा करना उनके वंशज गोस्वामी बालकों

का प्रथम कर्तव्य था। इस दृष्टि से श्रीविट्ठलनाथजी के पौत्र श्रीदामोदरजी स्वयं अपने काका गोविन्दजी, बालकृष्णजी एवं श्रीवल्लभजी ने श्रीनाथजी के विग्रह को प्रभु आज्ञा से ब्रज छोड़ देना उचित समझा और समस्त धन इत्यादि को वहीं छोड़कर एकमात्र अपने प्रिय श्रीनाथजी को लेकर वि.सं. 1726 आश्विन शुक्ल 15 शुक्रवार की रात्रि के पिछले प्रहर रथ में पधराकर ब्रज से प्रस्थान किया।

श्रीनाथजी का स्वरूप ब्रज में 177 वर्ष तक रहा तथा श्रीनाथजी अपने प्राकट्‌य संवत् 1549 से लेकर संवत् 1726 तक सेवा स्वीकारते रहे।

म्लेच्छों के विषम व्यवहारों व अत्याचारों के कारण श्रीनाथजी को लेकर मेवाड़ की ओर प्रस्थान करना पड़ा। 'श्रीजी मेवाड़ पधारेंगे' की भविष्यवाणी श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी ने द्वारिका यात्रा जाते समय मार्ग में **वीरभूमि मेवाड़** की ओर देखकर अपने शिष्य बाबा हरिवंश के सामने कर दी थी कि **"या स्थल विशेष कोई इक काल पीछे श्रीनाथजी विराजेंगे।"** उधर गोवर्द्धन से श्रीनाथजी के विग्रह को रथ के साथ लेकर सभी आगरा की ओर चल पड़े। बूढ़े बाबा महादेव आगे प्रकाश करते हुए आगरा में जहां उनकी हवेली थी, अज्ञात रूप से पहुंचे। यहां 16 दिन तक गुप्त रूप से

विराजे। अन्नकूट यहीं पर किया पीछे यहां से कार्तिक शुक्ला 2 को पुनः लक्ष्यविहीन यात्रा पर चल पड़े।

श्रीनाथजी के साथ रथ में परम भक्त गंगाबाई रहती थी। तीनों गोस्वामी बालकों में एक काका वल्लभजी डेरा (तम्बू) लेकर आगामी निवास की व्यवस्था हेतु चलते। साथ में रसोईया, बालभोगिया, जलघरिया भी रहते। श्रीगोविन्दजी श्रीनाथजी के साथ रथ के आगे घोड़े पर चलते थे। सभी परिवार मिलकर श्रीनाथजी के लिए सामग्री बनाते व भोग धराते। मार्ग में संक्षिप्त अष्टयाम सेवा चलती रहती थी।

आगरा से चलकर ग्वालियर राज्य में चंबल नदी के तटवर्ती दंडोती घाट नामक स्थान पर मुकाम किया। यहां कृष्णपुरी में श्रीनाथजी बिराजे। यहां से चलकर कोटा कृष्णविलास की पद्‌मशिला पर श्रीनाथजी चार माह तक बिराजमान रहे। कोटा से चलकर पुष्कर होते हुए कृष्णगढ़ पधराये गये। वहां नगर से दो मील दूर पहाड़ी पर पीताम्बरजी की गाल में बिराजे। कृष्णगढ़ से चलकर जोधपुर राज्य के स्थानों से होते हुए चोपासनी पहुंचे। जहां श्रीनाथजी चातुर्मास तक बिराजे तथा संवत् 1727 में कार्तिक माह में श्रीनाथजी का अन्नकूट उत्सव किया। "अंत में मेवाड़ राज्य के सिंहाड़ नामक स्थान पहुंचकर स्थायी रूप से बिराजमान हुए।" उस काल में मेवाड़ के महाराणा राजसिंह सर्वाधिक शक्तिशाली हिन्दू नरेश थे। इन्होंने औरंगजेब की उपेक्षा कर पुष्टि सम्प्रदाय के गोस्वामियों को आश्रय और संरक्षण प्रदान किया।

संवत् 1728 कार्तिक माह में श्रीनाथजी सिंहाड़ पहुंचे, वहां मंदिर बन जाने पर फाल्गुन कृष्ण सप्तमी शनिवार को उनका पाटोत्सव किया गया।

इस प्रकार श्रीनाथजी को गिरिराज के मंदिर से पधराकर सिंहाड़ के मंदिर में बिराजमान करने तक दो वर्ष चार माह सात दिन का समय लगा।

श्रीनाथजी के कारण मेवाड़ का वह अप्रसिद्ध ग्राम सिंहाड़ अब श्रीनाथद्वारा नाम से भारत में ही नहीं विश्व में सुविख्यात है। सेवा भावना के विशेष रूप को प्राणान्वित किया। उन्होंने अपने अष्टछाप के भक्त कवियों को अष्टयाम दर्शनों के लिये कीर्तन की सेवा प्रदान की। श्रीगुसांईजी के जीवनकाल में श्रीनाथजी की अष्टयाम सेवा भावना का क्रम उत्तरोत्तर बढ़ता गया।

उन्हीं की सेवा भावना से उत्तरोत्तर स्वरूप अब नाथद्वारा में मरीचि माली की भांति दैदीप्यमान है। एक दीर्घकालीन नाथद्वारा प्रवास के पश्चात् विकट राजनीति कारणों के कारण प्रभु श्रीगोवर्धनधरण श्रीनाथजी को नाथद्वारा से घसियार होते हुए विक्रम संवत् 1858 उदयपुर पधराना पड़ा। भगवान् श्रीनाथजी के उदयपुर पहुंचने पर एक लघु मंदिर में प्रभु बिराजे और उसके बाद नाथद्वारा के समान मंदिर कार्य का निर्माण कार्य बढ़ाया गया। यहां श्रीनाथजी दस माह बिराजे, अन्नकूट उत्सव भी यहीं सम्पन्न हुआ पर सिन्धिया की सेना बढ़ती हुई, यहां भी आ पहुंची। महाराणा भीमसिंहजी ने

अपने खजाने से बहुमूल्य हीरा जवाहरात सिन्धिया को दिये परन्तु सिन्धिया का अत्याचार बढ़ता ही गया। ऐसी स्थिति में तिलकायत श्री अपने को असुरक्षित मान श्रीनाथजी एवं अन्य द्वय स्वरूप श्रीनवनीतलालजी तथा श्रीविट्ठलनाथजी को किसी निर्जन स्थान पर ले ज़ाने का विचार करने लगे। अन्ततः घसियार नामक स्थान सभी प्रकार से उपयुक्त लगा। यकायक यहां किसी का पहुंचना सहज नहीं था। यहां नाथद्वारा के समान ही मंदिर बनवाकर श्रीनाथजी को घसियार पधराया गया। तत्कालीन ति. श्रीगिरधरजी ने यहां दूसरा नाथद्वारा बसा दिया। यहां नित नये मनोरथ उत्सव होने लगे। किन्तु घसियार की जलवायु सभी को अनुकूल नहीं हुई। तब कृपा सिन्धु भगवान् श्रीनाथजी ने तुरन्त अपना दायां श्रीहस्त दाऊजी के उपर रखा और नाथद्वारा कूच करने की आज्ञा दी। तद्नुसार पांच वर्ष 2 माह घसियार बिराजने के पश्चात् वि.सं. 1864 में भगवान् श्रीनाथजी अपने दल–बल सहित अनेक भक्तों के साथ युद्धभूमि हल्दीघाटी के बीहड़ रास्ते से खमनोर होते हुए पुनः नाथद्वारा पधारे। तब से घसियार में आज भी चित्रजी की सेवा होती है, मनोरथ उत्सव होते हैं। नाथद्वारा मंदिर की वहां प्रतिकृति है।



10. महाप्रभु वल्लभाचार्यजी की चौरासी बैठकें

1. गोकुल की पहली बैठक – गोविन्द घाट, उ.प्र.
2. गोकुल की दूसरी बैठक – भीतर की बड़ी बैठक
3. गोकुल की तीसरी बैठक – श्रीद्वारकाधीश का शैय्या मंदिर
4. वंशीवट – वृन्दावन, जिला मथुरा
5. विश्रामघाट – मथुरा
6. मधुबन – महोली, जिला मथुरा
7. कुमुदवन – पोस्ट उस पार, जिला मथुरा, उ.प्र.
8. बहुला बन – पोस्ट बाटी गांव, जिला मथुरा
9. राधाकृष्ण कुण्ड पो. राधाकुण्ड, जिला मथुरा
10. मानसी गंगा (दो बैठकें) – वल्लभघाट चकलेश्वर के पास, पोस्ट गोवर्धन, जिला मथुरा
11. परासोली (परसराम स्थली), चन्द्रसरोवर, पोस्ट गोवर्धन, जिला मथुरा
12. आन्योर – सद्दूपाण्डे का घर, पो. आन्योर, मथुरा
13. गोविन्द कुण्ड – पोस्ट आन्योर, जिला मथुरा
14. सुन्दर शिला – गिरिराज जी के सामने

15. गिरिराज की बैठक – पो. जतीपुरा, जिला मथुरा

16. कामवन की बैठक – श्रीकुण्ड, पो. कामा, जिला भरतपुर (राज.)

17. गहूरवन – राधारानी के मंदिर के आगे, मोरकुटी के नीचे, पोस्ट बरसाना, जिला मथुरा

18. संकेतबन बगीचे में, कृष्ण कुण्ड, पोस्ट बरसाना

19. नन्दगांव – मानसरोवर, सड़क के उस पार, पो. नन्दगांव, जिला मथुरा

20. कोकिलावन – पोस्ट बठेन, जिला मथुरा

21. भांडीरवन – (अप्रकट)

22. मानसरोवर (माखन), पो. माट, जिला मथुरा

23. सूकर क्षेत्र – सौरभ घाट, पोस्ट सौरों, जिला अटोहा, उ.प्र.

24. चित्रकूट – कामलानाथ पर्वत, पोस्ट पीली कोठी, म.प्र.

25. अयोध्या – गुसांई घाट (अप्रकट)

26. नैमिषारण्य – वेदव्यास आश्रम के सामने

27. काशी की पहली बैठक – पुरुषोत्तमदासजी का घर, जतन बड़, चैतन्य रोड, दूध हट्टी के पास, वाराणसी

28. काशी की दूसरी बैठक – पंच घाट (भावनात्मक)

29. हरिहर क्षेत्र – महादेवजी के मंदिर के पास, मगर हट्टा चौक, वैद्यनाथ धाम, जिला वैशाली बिहार, हाजीपुर

30. जनकपुर – (अप्रकट) माणिक तालाब

31. गंगासागर – कपिल कुण्ड पर, (अप्रकट)

32. चम्पारण्य की पहली बैठक, राजिम, जिला रायपुर, म.प्र.

33. चम्पारण्य की दूसरी बैठक, घट्टी की बैठक

34. जगन्नाथपुरी – हजारीमल, दूध वाले की धर्मशाला के पास, ग्राण्डरोड, पुरी 752001, उड़ीसा

35. पंढरपुर – चन्द्रभागा नदी के उस पार, महाराष्ट्र

36. नासिक – परसरामपुरिया मार्ग, पूसा, पंचवटी, नासिक

37. पना नृसिंह – मंगलगिरि स्टेशन, बिजयवाड़ा (अप्रकट)

38. लक्ष्मण बालाजी – कर्नाटक धर्मशाला (छत्रम) के बाजू में, तिरूपति (आ.प्र.)

39. श्रीरंग – त्रिचनापल्ली (अप्रकट) कावेरी में बह गई

40. विष्णु कांची – कांचीपुरम (तमिलनाडु)

41. सेतुबन्ध रामेश्वर – (अप्रकट)

42. मलय पर्वत – उटकमंड के पास (अनिश्चित)

43. लोहागढ़ – (हरी) फाल के सामने पणजी, गोआ

44. ताम्रपर्णी नदी की बैठक, तिरूनेल्वेली रेलवे स्टेशन के पास, (भावनात्मक)

45. कृष्णा नदी की बैठक – (अनिश्चित)

46. पंपा सरोवर – (अनिश्चित) – हासपेट

47. पद्मनाथ – पौढ़ानाथ

48. जनार्दन – पो. बरकला (केरल राज्य)

49. विद्यानगर – (अप्रकट)

50. त्रिलोकभानजी की बैठक – (अप्रकट)

51. तोताद्रि पर्वत – नांगनेरी, तिरूनेल्वेली रेलवे स्टेशन (अप्रकट)

52. दर्मशयन – आरिसेतु, रामनाडपुरम, (तमिल)

53. सूरत – अश्विनी कुमार घाट, सूरत (गुजरात)

54. भरूच – पावर हाउस के पास, जिला कचहरी के पीछे, भरूच (गुजरात)

55. मोरवी – मच्छुनदी के सामने का घाट, मोरवी (सौराष्ट्र)

56. नवानगर – नागमती नदी का घाट, काला बड़ गेट रोड, जामनगर

57. खंभालिया – स्टेशन रोड, कुंभ के ऊपर खंभालिया, जिला जामनगर वाया द्वारका

58. पिंडतारक – पो. पिंडरा, भोपाल का स्टेशन, जिला जामनगर वाया द्वारका

59. मूल गोमती – व्यवस्था (पुरी मावती) देवीदास नाथूराम, नीलकंठ चौक, गोमती वाया द्वारका

60. द्वारका – गोमती नदी के किनारे, द्वारका

61. गोपी तालाब – जिला जामनगर, वाया द्वारका

62. बेट शंखोद्धार – शंख तालाब, भेंट द्वारका, जिला जामनगर

63. नारायण सरोवर, तह. लखपत, जिला कच्छ

64. जूनागढ़ – दामोदर कुण्ड, गिरनार रोड, जूनागढ़

65. प्रभास क्षेत्र – त्रिवेदी नदी का घाट, प्रभास पाटण, जिला जूनागढ़

66. माधवपुर – कदम्ब कुण्ड के ऊपर (बेड), जिला जूनागढ़

67. गुप्त प्रयाग – पोस्ट देलवाड़ा, जिला जूनागढ़, पिन 362510

68. तगड़ी – अहमदाबाद – बोटाद मार्ग पर, पिन – 382250

69. नरोड़ा → नरोड़ा रोड, अहमदाबाद

70. गोधरा – राणा व्यास मार्ग, पटेल बाजार, गोधरा, जिला पंचमहाल, गुजरात

71. खेरालु – श्रीमालीवास, खेरालु, जिला मेहसाणा

72. सिद्धपुर – विन्दु सरोवर रोड, सिद्धपुर, जिला मेहसाणा

73. उज्जैन – गोमती कुण्ड, सांदीपनी आश्रम के पास, उज्जैन, म.प्र.

74. पुष्कर – ब्रह्माजी के मंदिर के आगे, वल्लभ घाट, पुष्कर, जिला अजमेर (राज.)

75. कुरुक्षेत्र – सरस्वती कुण्ड, शक्ति देवी के मंदिर के पास, कुरुक्षेत्र

76. हरिद्वार – हर की पैड़ी के मार्ग पर हरिद्वार, उत्तरांचल

77. बदरिकाश्रम – मंदिर के पास, बद्रीनाथ, उत्तरांचल

78. केदारनाथ – (अप्रकट)

79. व्यास आश्रम – अलकनन्दा – भागीरथी संगम के पास, कैशव, प्रयाग, बद्रीनाथ, उ.प्र. (अप्रकट)

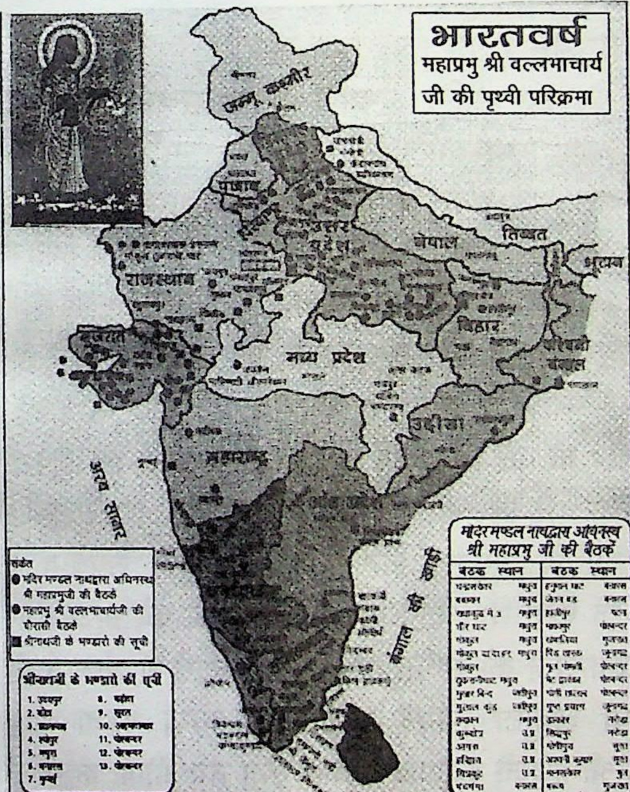
80. व्यास गंगा – (अप्रकट)

81. हिमालय पर्वत की बैठक – (अप्रकट)

82. मुद्राचल – (अप्रकट)

83. अडेल – त्रिवेणी संगम के सामने, ग्राम देवरस, पो. नैनी, जिला इलाहाबाद

84. चरणाट – आचार्यकूप, पोस्ट चूनार, जिला मिर्जापुर, उ.प्र.



11. सुदर्शन चक्र

'मत्स्य' पुराण में एक कथा आई कि पूर्व समय में सूर्य का तेज किसी से भी सहन न हो सका, सभी व्याकुल होने लगे तो विश्वकर्मा ने विवस्वान् सूर्य के दुःसह तेज को भूमि चक्र में चढ़ाकर सह्य बना दिया। इसी तेज से एक सुदर्शन चक्र, दूसरा शंकर का त्रिशूल, तीसरा इन्द्र का वज्र बना। उसी समय भगवान् विष्णु ने इस सुदर्शन चक्र को अपना आयुध बनाया और इसे सामर्थ्यवान् कर दिया। आचार्य चरण ने अपनी कारिका में बतलाया है –

शिवस्य त्रीणि रूपाणि दुर्वासास्त्वाधि भौतिकः ।

चक्रमाध्यात्मिकं प्रोक्तमधिदेवस्तु तद्वशे ।।

अतः यह शंकर स्वरूप भी है। भागवतोक्त स्तुति में मुनि वेदव्यासजी ने चक्र को सूर्य, चन्द्र, जल, पृथ्वी, आकाश, वायु, धर्म, सत्यरूप, सर्वात्मा पौरुष तेज के रूप में माना है। सुदर्शन चक्र एक अच्युत प्रिय भगवान् के समान ही महास्त्र है। इसका प्रयोग कृष्णावतार में राजा परीक्षित की रक्षा के प्रसंग में तथा शिशुपाल के वध के प्रसंग में हुआ है। संप्रति जो सुदर्शन श्रीजी के मंदिर पर बिराजते हैं उसके लिए दो आधार माने हैं – एक किंवदन्ती के अनुसार यह 'चक्र' रामानुज सम्प्रदाय के किसी वैष्णव के पास था। यहीं से आचार्य चरण को प्राप्त हुआ, आचार्य चरण चक्रराज को सर्वदा अपने साथ रखते थे। आचार्यश्री के एक शिष्य लकुटा लौकी

इसे ग्रहण किये रहता था। जब श्रीनाथजी का प्रादुर्भाव हो गया तब श्रीजी के मंदिर में इसकी प्रतिष्ठा कर दी गई। दूसरी किंवदन्ती है जिसे पं. लक्ष्मीनारायणजी ने सुदर्शनाचार्यजी के एक शिष्य से सुनी थी। उसके अनुसार इस दक्षिण ब्राह्मण ने बड़े प्रेम से यह सुदर्शन चक्र अपने अंतिम समय में आचार्य चरण को दिया था और सदैव इसकी सुरक्षा की प्रार्थना की थी। आचार्यश्री ने इसे अपने निधिरूप में अपनाया।

आचार्य हरिरायजी ने नाथद्वारा मंदिर में श्रीजी के छप्पर के ऊपर कलश एवं श्री सुदर्शन चक्र तथा सात ध्वजा सिद्ध करवाई थी। जो अद्यावधि दर्शन देकर भगवदीयों को कृतार्थ करती है। चक्र स्वरूप के लिए भाव यह माना गया है कि प्रलय के मेघ ने वर्षा की तब प्रभु ने आज्ञा की कि वह शिखर पर विराजमान होकर अतिवृष्टि को रोकते रहें तथा सदा सर्वदा विराजमान होकर प्रभु मंदिर की रक्षा करते रहे। वैसे स्थापत्य कलामंदिर के निर्माता की उक्ति के अनुसार राजप्रसाद तथा मंदिरों में सप्त धातु युक्त कलश एवं वरूण रखी जाय ताकि उसमें विद्या प्रवाहित हो सके।



12. श्रीनाथजी के वर्ष में होने वाले महत्वपूर्ण उत्सव

मनोरथ एवं उनकी तिथियां

:: वर्षोत्सव ::

संवत्सरोत्सव – चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नव संवत् के रूप में मनाया जाता है। ठाकुरजी के सम्मुख राजभोग में नया पंचांग सुनाया जाता है।

गणगौर – चैत्र शुक्ल तृतीया से षष्ठी तक गणगौर का उत्सव मनाया जाता है। गणगौर उत्सव तीन दिन गणगौर घाट पर एवं चौथे दिन का मेला मोती महल के प्रांगण में लगता है। नाथद्वारा में चार दिन तक मेला लगता है। जो राधा, चन्द्रावली, ललिता तथा यमुना के भाव से है। बनास नदी पर स्थित गणगौर घाट के उद्यान में गणगौर उत्सव मनाया जाता है। चार विभिन्न रंगों में यथा चूंदड़ी, हरी, गुलाबी और केसरिया रंग में धूमधाम से जन–समुदाय के साथ राजसी ठाठ–बाट के साथ आयोजित होता है।

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी का प्राकट्योत्सव

वैशाख कृष्ण एकादशी (वरूथिनी) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी का प्राकट्य दिवस धूमधाम से आयोजित किया जाता है। शृंगार में केसरिया वस्त्र चाकदार श्रीमस्तक पर कुले मोर पंख का जोड़ और जन्माष्टमी के अनुसार भारी शृंगार अंगीकार होता है। प्रदर्शिनी एवं शोभायात्रा आयोजित की जाती है।

अक्षय तृतीया – वैशाख शुक्ल तृतीया अक्षय तीज के रूप में मनाई जाती है। ऋतु परिवर्तन के होने से श्रीठाकुरजी को 'सतवा' भोग में धराया जाता है, श्री विग्रह को चन्दन धराया जाता है। आज के दिन ही संवत् 1556 विक्रमी में गोवर्द्धन पर्वत पर श्रीनाथजी के मंदिर की नींव रखी गई थी।

श्रीनृसिंह जयन्ती – वैशाख शुक्ल चतुर्दशी श्रीनृसिंह जयन्ती उत्सव मनाया जाता है। संध्या आरती के पश्चात् श्रीनृसिंह भगवान् का जन्म होता है। इसके विशेष दर्शन खुलते हैं। इस समय श्रीशालिग्रामजी को पंचामृत स्नान कराया जाता है। शयन भोग के समय के साथ ही भगवान् राजभोग आरोगते हैं। आज से श्रीजी के सन्मुख यमुना जल का थाल रखा जाता है जो राजभोग से संध्या आरती तक रहता है। प्रत्येक घंटे शीतल जल का छिड़काव होता है।

स्नान यात्रा – ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को स्नान यात्रा का उत्सव मनाया जाता है। एक दिन पूर्व तिलकायित अपने सेवकों के साथ बनास नदी स्थित **'कूआ'** (श्रीजी के निजी जलाशय) से जल भरकर लाते हैं, शयन के समय जल का अधिवासन होता है। जल में सुगन्ध हेतु केशर, अरगजा, तुलसी, रायबेल की कली, गुलाब की पंखुड़ियां पधराई जाती है।

मंगला आरती के पश्चात् प्रभु श्रीनाथजी को सफेद धोती, उपरना धराते हैं, फिर तिलकायित श्रीनाथजी का अभिषेक करते हैं तथा विद्वान् ब्राह्मण सुवर्ण धर्मानुवाक् पुरुष सूक्त का उस समय पाठ करते हैं। प्रभु श्रीनाथजी को सवा लाख आमों का भोग धराया जाता है। बाहर से आमों के ट्रक के ट्रक भरकर आते हैं। सेवक भक्तगण

ठाकुरजी के सेवामें आम भेजते समय अपना नाम ज्ञात नहीं होने देते। बस भेजने वाला श्रीनाथजी और पाने वाला श्रीनाथजी लिखा होता है।

शीतलता का वातावरण करने हेतु श्रीजी बावा के शृंगार वस्त्रों में ऋतु अनुसार परिवर्तन किया जाता है। शृंगार में कमल बूंटा वाले चंदन के सफेद वस्त्र, पिछोडा, श्रीमस्तक पर फुलेल पांच मोर पंख की जोड़ कुण्डल वनमाला का शृंगार, मोती के आभरण, पिछवाई, कमल बूटे वाले, चंदन के सफेद वस्त्र आते हैं।

आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को ति. श्रीगोवर्धनलालजी महाराज श्री गादी पर बिराजे थे। आज के दिन प्रभु आम की तवा–पूड़ी अरोगते हैं तथा फव्वारे के चारों ओर फूल वाड़ी आती है।

रथयात्रा – आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को रथयात्रा महोत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव वल्लभ सम्प्रदाय में पुष्य नक्षत्र में ही मनाया जाता है, चाहे पुष्य नक्षत्र प्रतिपदा को आये अथवा तृतीया को श्रीठाकुरजी को रथ में विराजमान करके पुष्पों की वर्षा की जाती है।

कसूंभा षष्ठी – कसूंभा षष्ठी वल्लभ सम्प्रदाय में आषाढ़ शुक्ला छट को कसूंभा षष्ठी के रूप में मनायी जाती है।

ठकुरानी तीज – श्रावण शुक्ल तृतीया (ठकुरानी तीज) को ठकुरानी का उत्सव मनाया जाता है।

श्रावण शुक्ल 11 (पवित्रा एकादशी) – श्रावण शुक्ल एकादशी पुष्टि प्राकट्य दिवस है। श्रीमहाप्रभुजी को संवत् 1549 को गोकुल में श्रीनाथजी ने आज के दिन ही दर्शन दिये थे। जिसके उपलक्ष में आचार्यश्री ने पवित्रा धराकर प्रभु को मिश्री का भोग रखा तथा ब्रह्म

संबंध दीक्षा दामोदरदास हरसानी को दी एवं प्रभुदास जलोटा।

जन्माष्टमी – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (जन्माष्टमी) भगवान् श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव पूरे भारत में ही नहीं अपितु जहां–जहां भी विदेशों में हिन्दू समाज रहता है तथा मंदिर है, वहां सभी स्थानों पर जन्माष्टमी उत्साहपूर्वक मनाई जाती है। वल्लभ संप्रदाय में यह महोत्सव अति भक्ति भाव से मनाया जाता है। प्रातः मंगला आरती से सेवा शृंगार का कार्य शुरू हो जाता है। घंटा, झालर तथा शंख ध्वनि के साथ पंचामृत स्नान शुरू होता है। सुन्दर शृंगार धारण कराया जाता है।

डोलतिबारी में कीर्तन होते हैं। मध्यरात्रि को 12 बजे बैण्ड, नगाड़ा, तुरही तथा नौपत व तोपों द्वारा घोष एवं कृष्ण जन्म की झांकी के दर्शन होते हैं। महाभोग आता है। शोभायात्रा भव्यता के साथ निकाली जाती है। मंदिर मण्डल द्वारा आयोजित शोभायात्रा में नाथद्वारा तथा आसपास की शिक्षण संस्थाएं तथा अन्य संस्थाओं की झाकियें–उत्सव में भाग लेती है। श्रीकृष्ण लीला सम्बन्धी झांकियों एवं श्रीकृष्ण लीला के दर्शन कर जनसमूह भाव–विभोर हो उठता हैं। साक्षात् कृष्ण जन्म की अपार खुशी के साथ ब्रजदर्शन साक्षात् हो जाते हैं। प्रसाद वितरण किया जाता है। नाथद्वारा की श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विश्व में प्रसिद्ध है।

नन्द महोत्सव – भाद्रपद कृष्ण नवमी को नंद महोत्सव ब्रजमण्डल के साथ–साथ वल्लभ सम्प्रदाय के समस्त मंदिरों में अति–उल्लास के साथ भक्ति भाव से मनाया जाता है। यशोदाजी प्रभु को पालने में झुलाती है। वैष्णव **'नंद के घर आनन्द भयो जय कन्हैयालाल की'** का

गायन उच्चारण नृत्य, ताल के साथ उछलकूद कर गा–गा, नाच–नाच कर अपनी खुशी, आनन्द व्यक्त करते हैं। दर्शन पट खुलते हुए कीर्तनियाजी कीर्तन मण्डली के साथ झांझ, पखावज के गुंजन में बधाई गाने लगते हैं।

"ब्रज भयौ मेहर के पूत, जब यह बात सुनी ।

सुनि–आनन्दे सब लोक, गोकुल गणित गुनी ।"

अष्ट सखाओं के गाये पद बधाइयां गायी जाती है। श्रीनाथजी के मुखियाजी नंदबावा व श्री नवनीतप्रियजी के मुखियाजी यशोदा बनकर श्रीकृष्ण कन्हैया को पालने झुलाते हैं। सायंकाल आरती के समय ढाडा ढाडिन नन्दालय में पदगान के साथ नृत्य करते हैं।

राधाष्टमी – भाद्र शुक्ल अष्टमी को राधाजी का जन्मोत्सव मंदिरों में श्रद्धा भक्ति के साथ मनाया जाता है। ठाकुरजी के सम्मुख राधाजी की झांकी में श्रीराधाजी की भावना से साड़ी चोली शृंगार की वस्तुएं आसन पर रखी जाती है।

दशहरा – वल्लभ सम्प्रदाय द्वारा दशहरा उत्सव भी धूमधाम से मनाया जाता है। आज से सवा लक्ष तुलसी मंगला उपरांत प्रतिदिन श्रीजी के चरणों में धराई जाती है। यह सेवा कार्तिक शुक्ल 10 तक चलती है। राजभोग में श्रीजी के सम्मुख काष्ठ की गायें सुसज्जित करके रखी जाती है। दर्शन पश्चात् डोलतिबारी में सुखपाल आता है। मंदिर में यत्र तत्र दीपदान होता है। आकाशी दीप प्रज्वलित किया जाता है। बैठक में अश्व एवं शमी पूजन होता है। वर्ष में एक बार आज ही के दिन श्रीनाथजी के साथ पधारे हुए गोपाल निशान की विधिवत् पूजा होती है। कमल चौक में दीपमालिका लगाई जाती है।

यह क्रम कार्तिक पूर्णिमा तक चलता है। शयन के दर्शन खुलने लग जाते हैं। आज के दिन से अन्नकूट की सामग्री का शुभारंभ हो जाता है।

आज दशहरा पर भोग में दस बड़े और दस छोटे माट धराये जाते हैं।

शरदोत्सव (शरद पूर्णिमा) – आश्विन की पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा मनाई जाती है। ठाकुरजी के वस्त्र तथा साज–सज्जा सभी श्वेत जरी के होते हैं। सामग्री में दूध तथा खीर धराई जाती है। शरदोत्सव के श्रृंगार में पिछवाई महारास की होती है।

दीपमालिका – दीपावली का महोत्सव भी श्रीजी की नगरी में बहुत धूमधाम, मनोयोग, उत्साह से मनाया जाता है। सायंकालीन सेवा के दर्शन होते हैं। गोशाला से गायें आती हैं। गोवर्धनपूजा चौक में नन्दरायजी के गोवंश की गाय को तिलक करके **'कान्ह जगाई'** करते हैं। यह परम्परा पूज्यपाद् तिलकायत श्रीमानों के द्वारा सम्पन्न होती है, सुखपाल में श्रीनवनीतलालजी पधारते हैं, दूध का भोग धराया जाता है।

अन्नकूट – दीपावली के दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा गोवर्धनपूजा का दिन होता है। इस दिन गोवर्धन पूजा गंगाजल, धूप, चन्दन, कुंकुम आदि से होती है, माला धराई जाती है। धूप, दीप होता है, वस्त्र धरा कर माला धराते हैं। भोग धराकर आरती होती है, गोबर से निर्मित गोवर्धन पर गाएं चढ़ाई जाती हैं। श्रीनाथजी में अन्नकूट का विशेष उत्सव होता है, जिसके दर्शन करने समीपवर्ती भक्तजनों के अतिरिक्त दूर–दूर के अन्य वैष्णवजनों की भारी भीड़ होती है। सायं गायों के खिलाने का खेंखरा उत्सव होता है। प्रभु श्रीनाथजी को सौ मन से अधिक चावल का शिखर बनाकर भोग धराया जाता है, इसके चारों ओर अन्य विभिन्न प्रकार की सखड़ी–अनसखड़ी की सामग्रियां धराई जाती है। भोग आने व सरने के बाद दर्शन खुलते हैं। इसके साथ ही

भील अन्नकूट लूटने आते हैं। यह भात लूटने का आनंद एवं उत्साह का वातावरण दर्शनीय व अविस्मरणीय होता है। हजारों दर्शनार्थियों को दर्शन भी होते हैं।

यम द्वितीया – कार्तिक शुक्ल दूज को यम द्वितीया 'भैयादूज' होती है। ठाकुरजी के भैयादूज का तिलक लगाया जाता है।

गोपाष्टमी – कार्तिक सुदी अष्टमी गोपाष्टमी का दिन गौ–पूजा के रूप में मनाया जाता है। इस दिन नन्दनंदन श्रीकृष्ण ग्वाल बाल सखाओं के साथ गोचारण हेतु वन गये थे, इस दिन ठाकुरजी के मुकुट काछनी का भारी श्रृंगार होता है।

नाथूवास गऊशाला में गायों को थूली खिलाई जाती है और भारी मेला लगता है, वृषभ, महिषों की भिडन्त होती है।

अक्षय नवमी – कार्तिक सुदी नवमी को भोग, संध्या आरती में श्रीजी बावा को तुलसी माला धराई जाती है, पेठा फल दान किया जाता है। पेठा फल की मिठाई का भोग धराया जाता है।

कदाचित् दीपावली को सूर्यग्रहण हो जाय तो अन्नकूट आज के दिन अरोगते हैं। घसियार में भी आज ही के दिन अन्नकूट महोत्सव होता है तथा विशाल मेला लगता है।

प्रबोधिनी एकादशी – कार्तिक सुदी एकादशी को तुलसी शालिग्राम का विवाह उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। डोल–तिबारी में हल्दी–रोली के मांगलिक चौक रचाये जाते हैं। इन चौकों में गन्ना के दो विवाह मण्डप बनाये जाते हैं जिसमें एक में श्री बालकृष्णलाल तथा दूसरे में तुलसीजी पधराये जाते हैं।



13. पूज्यपाद तिलकायित गोस्वामीजी महाराज

अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीमद् वल्लभवंशावतंस गो.ति.पू.आ. श्री १०८ श्री राकेशजी (श्री इन्द्रदमनजी महाराज) श्रीनाथजी की सम्पूर्ण सेवाओं के सर्वेसर्वा हैं और वल्लभ सम्प्रदाय में प्रभु की सेवा के अन्तर्गत गुरु की आज्ञा नितान्त प्रधान मानी जाती है। अतः समस्त प्रभु की सेवाएं ति. महाराज श्री की आज्ञानुसार सम्पन्न होती आ रही है।

प्रभु श्रीनाथजी की सेवा कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु व्यवस्था को कई विभागों में विभाजित किया हुआ है। वैसे मंदिर की बनावट परिसर, विभाग, नंदालय की स्वरूपात्मक भावना के अनुसार निर्मित है। प्रत्येक विभाग का प्रमुख मुखिया होता है जो उस विभाग में कार्यरत अन्य सेवावालों से अपनी देख–रेख में सेवाकार्य करवाता है, जिससे प्रभु की सेवा में तनिक भी विलम्ब अथवा व्यवधान उपस्थित न हो सके। व्यवस्थानुसार सेवा के विभाग सेवापदाधिकारी का विवरण निम्नानुसार है।

14. मंदिर के सेवा विभाग अधिकारी एवं कार्य

प्रमुख मुखियाजी – प्रभु की सेवा तथा शृंगार सम्बन्धी निज मंदिर का कार्य इनका होता है। ये ही प्रभु को शृंगार धारण कराते हैं तथा भोग आरोगाते हैं। इनकी सेवा का भाव यशोदा मैया का होता है। बड़े मुखियाजी के अलावा दो और मुखियाजी सेवा हेतु हैं। इनकी सहायता हेतु भीतरिये नियुक्त है जो भोग धराने, सराने, बंगला लगाने एवं अन्य शृंगार सम्बन्धी सेवा में रहते हैं। इनकी सेवा गोपी भाव से होती है।

अधिकारी जी – श्रीमान् पू.पा.ति. महाराज श्री की आज्ञानुसार सेवा सम्बन्धी सभी कार्यों का परम्परानुसार सम्पादन कराते हैं एवं आप श्री कृष्ण भण्डार में श्रीकृष्णदासजी की गादी पर बिराजते हैं। पूज्यपाद गो.ति.आ. श्री द्वारा प्रदत्त सेवा संबंधी एवं व्यवस्था संबंधी इन्हें अनेक अधिकार प्राप्त है।

प्रसादी भण्डारी – श्रीनाथजी को आरोगाये अनसखड़ी प्रसाद को सेवावालों में वितरण का सारा कार्य प्रसादी भण्डारी का होता है। ये ही शयन दर्शनान्तर ठाकुरजी के निज मंदिर की चाबियों का झूमका पधराते हैं। ताला मंगल मुखियाजी और भण्डारीजी दोनों ही करते हैं।

प्रसादी भण्डार का दरोगा – मंदिर के समाधान विभाग में भेंट में प्राप्त होने वाली रकम इनके पास ही जमा होती है।

खासा भण्डारी – भगवान् श्रीनाथजी के भोग हेतु बनने वाली समस्त सामग्री की सफाई तथा पिसाई का कार्य इनके जिम्मे रहता है। इनके इस कार्य में सहायता हेतु 16 पैरवा तथा 12 बाईयां रहती हैं, इनके कार्य पर निगरानी हेतु एक हवलदार तथा एक निगरा की नियुक्ति होती है।

खांडघरिया – शक्कर के कतले एवं शक्कर सम्बन्धी सेवा का प्रभार इन्हीं के जिम्मे होता है।

शाक घरिया – भोग हेतु शाक सब्जी, फल–फूल आदि की सफाई

एवं सेवा का भार शाकघरियाजी के जिम्मे रहता है। श्रीनाथजी के भोग का अत्यन्त प्रसिद्ध शाकघर (बादाम पाक) भी यहीं सिद्ध किया जाता है। इनके कार्य में सहायता के लिए परिचारक व एक मुनीम भी रहता हैं।

पान घरिया – ठाकुरजी को आरोगाये जाने वाले बीड़े पानघर में पान घरियाजी सिद्ध करते हैं। प्रभु को प्रत्येक महाप्रसाद आरोगाने के पश्चात् बीड़ा आरोगाया जाता है।

फूल घरिया – ठाकुरजी के लिये पुष्प से बनायी जाने वाली मालाजी कर्णफूल, शीशफूल, मुकुट, फूलमण्डली आदि की सेवा फूलघरियाजी करते हैं। इनके साथ पांच सहायक भी होते हैं, जिन्हें लाला कहते हैं।

ग्वालजी – भोग हेतु दूधघर सम्बन्धी सामग्री ग्वालजी दूधघर में ही सिद्ध करते हैं। इनके साथ दो परिचारक भी नियुक्त होते हैं। दूधघर में बासुंदी, खोवा, मलाई, मावा, बरफी, दही, श्रीखण्ड आदि सामग्रियां सिद्ध होती हैं।

समाधानी – वैष्णवों को अच्छी प्रकार से समझाकर संतुष्ट करे। वैष्णवों से प्रभु एवं गुरू की सेवा तन, मन, धन से करवावे, सम्पूर्ण प्रकार से संतुष्ट करे, उसे ही समाधानी कहते हैं।

बालभोगियाजी – ठाकुरजी के भोग हेतु निर्मित समस्त अनसखडी सामग्री बालभोग में सिद्ध होती है। इस विभाग के मुखिया बालभोगिया कहलाते हैं। इनके आठ सहायक होते हैं, जिन्हें मठडी छोड़ने वाले कहते हैं।

रसोईया – प्रभु के भोग की सखड़ी सम्बन्धी समस्त सामग्री रसोईघर में रसोईयाजी द्वारा सिद्ध की जाती है। इनके साथ तीन परिचारक होते हैं।

झापटिया – श्रीनाथजी के दर्शनों में सुव्यवस्था बनाये रखना झापटियों का सेवाकार्य होता है। इनकी संख्या पांच होती है। ठाकुरजी के भोग, दर्शन तथा आरती की सूचना महाराजश्री को देना भी इन्हीं के जिम्मे होता है। प्रत्येक दर्शन खुलने से पूर्व झापटिया बैठक से दर्शनों की आज्ञा लाते हैं।

छड़ीदारजी – ठाकुरजी के निज मंदिर के ठीक बाहर स्थित **'मणिकोठा'** में इनकी सेवा रहती है एवं भोग के दर्शन के समय छड़ीदारजी छड़ी लेकर खड़े रहते हैं। ये ही आठों दर्शनों में आने वाली भेंट को संभालते हैं।

कीर्तनिया – प्रभु की राग सम्बन्धी सेवा हेतु **'अष्टसखा'** भाव के आठ कीर्तनिया नियुक्त हैं जो दर्शनों में कीर्तन करने के साथ–साथ मंगला से पूर्व ठाकुरजी को जगाने तथा संध्या के पश्चात् शयन के लिये बीन सुनाते हैं।

कुबेर का पोलिया – प्रभु के निज मंदिर के ऊपर प्रभु सेवा में तत्पर चक्रराज श्रीसुदर्शनजी बिराजे हुए हैं। सुदर्शनजी की यथाविधि सेवा का भार कुबेर पोलियाजी पर होता है।

उस्ताजी – ठाकुरजी के पलना, हिण्डोलना, बंगला सम्बन्धित सेवा की व्यवस्था का भार उस्ताजी पर होता है। इनकी सार–संभाल व सेवा हेतु तैयार कराना भी इन्हीं की जिम्मेदारी रहती है। इनके जिम्मे

मंदिर की अमूल्य धरोहर है।

रसोई का दरोगा – भोग में निर्मित सखड़ी महाप्रसाद प्रभु को अर्पण के अनन्तर सेवा–वालों में नियमानुसार वितरण कर दिया जाता है। वितरण व्यवस्था करने का भार रसोई के दरोगाजी का होता है।

रसोई का पोलिया – ठाकुरजी की सेवा वाले मुखियाजी, भीतरिया आदि को 'अपरस' हेतु स्नान कराने का दायित्व रसोई के पोलिया का होता है।

हेला वाला – इनका कार्य प्रातः शंखनाद से दो घण्टे पूर्व सेवा वालों को आवाज लगाकर जगाने का है।

गहनाघर का दरोगा – ठाकुरजी की सेवार्थ नवीन आभूषण का निर्माण और पुनः सुधरवाने सम्बन्धी सेवा इनके जिम्मे रहती है।

परछना मुखिया – परछना विभाग में नियुक्त सेवावालों से सेवा लेने का कार्य ये करते हैं।

गुलाबजल मुखिया – ठाकुरजी के सिद्ध होने वाली समस्त सुवासित सामग्री में गुलाब जल पधराया जाता है, उसकी निर्माण सम्बन्धी व्यवस्था वे ही करते हैं।



15. श्रीनाथ म्यूजियम

प्रमुख उद्यान लालबाग में गो.ति. महाराजश्री के प्राचीन महल में अब श्रीनाथ म्यूजियम बनाया हुआ है, जो आकर्षण का केन्द्र है।

महल के मुख्य द्वार में प्रवेश होने के पश्चात् सुन्दर चार कुण्ड तथा फव्वारे हैं। आगे विशाल हॉल में तिलकायत वंशावली के सभी महाराजश्री के बड़े–बड़े चित्र लगाये हुए हैं, बीच में श्रीनाथजी, श्रीमहाप्रभुजी, श्रीयमुनाजी के चित्र हैं। पास ही चौरासी बैठकों के चित्र हैं। पुरानी आटा पीसने की चक्कियां तथा बहुत पुरानी प्रिटिंग मशीनें भी रखी गई है। उपर एक कक्ष में पुरानी तलवारें, ढाल इत्यादि तथा प्राचीन चित्र हैं।

16. भेंट व मनोरथ में A.T.M. का प्रयोग

पूज्यपाद् तिलकायत महाराजश्री के आशीर्वाद एवं मण्डल निर्देशानुसार किसी भी मनोरथ (राजभोग, दिनभर का मनोरथ अथवा अन्य कोई सामग्री) तथा नकद भेंट भेजने के लिये सबसे बड़े *A.T.M.* नेटवर्क *ICICI* पर भारत में किसी भी स्थान से ऑन–लाईन सुविधा उपलब्ध है। श्रीनाथजी की सेवा के लिए किसी भी स्थान से राशि अथवा पार्सल आदि अधिकारी श्रीकृष्ण भण्डार के नाम से भिजवाई जा सकती है।

17. हवेली संगीत

पुष्टिमार्गीय वैष्णव मंदिरों को **'हवेली'** के नाम से सम्बोधित किया जाता है, जो कि मंदिर हवेलीनुमा होते हैं, यथा – बालकृष्णलाल की हवेली, श्रीनाथजी की हवेली आदि। इन्हीं मंदिरों (हवेलियों) में गाये जाने वाले अष्टसखा रचितपदों (कीर्तन) को **'हवेली संगीत'** के नाम से जाना जाता है। पुष्टिमार्गीय वैष्णव मंदिरों (हवेली संगीत) का साहित्य सभी दृष्टिकोणों से उच्चतम स्तर का है। काव्य में भाव पक्ष तथा कला पक्ष दोनों को भक्ति भावना का पुट देकर अद्वितीय रूप से समन्वय प्राप्त होता है। हवेली संगीत, भारतीय संगीत के क्षेत्र में एक प्राचीन व प्रतिष्ठित परम्परा है। अतः इनकी भारतीय संगीत को अभूतपूर्व देन है।

18. एल.पी.जी. प्रोजेक्ट

पूज्यपाद तिलकायत महाराजश्री के शुभाशीर्वाद एवं मण्डल निर्देशानुसार दिनांक 15 अगस्त, 2002 से प्रभु श्रीनाथजी के भोग से संबंधित समस्त रसोईघरों व अन्य स्थान, जहां भी उर्जा की आवश्यकता है, उन्हें पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से पूर्व में जलाऊ लकड़ी ईंधन के स्थान पर एक बड़ा एल.पी.जी. संयंत्र 60,0000 लाख रुपये लागत का स्थापित किया जाकर पाईप लाइन के द्वारा सभी आवश्यक ऊर्जा–स्थानों को एल.पी.जी. आपूर्ति की जाकर समस्त सेवाएं ली जा रही हैं।

19. पिछवाई

पुष्टिमार्ग में श्रृंगार की परम्परा का विशेष महत्व है। प्रभु श्रीनाथजी के प्रत्येक दर्शन अथवा उत्सव के अवसर विशेष के अनुरूप श्रीनाथजी के पृष्ठभाग में विशाल चित्रांकन के रूप में वस्त्रों पर चित्रकारी, मीनाकारी, कशीदाकारी, जरी–किनारी इत्यादि के आभूषित पृष्ठ–परिवेश को पिछवाई कहा जाता है। समय के साथ–साथ यह स्थानीय लोककला के रूप में विकसित हो चुकी है व अब नाथद्वारा में विश्व–स्तर के निष्णात चित्रकार श्रीनाथजी तथा ब्रज–लीलाओं से संबंधित मनोरथ की पिछवाइयों को तैयार करते हैं जो वैष्णव भावपूर्ण रूप से न्योछावर पर प्राप्त करते हैं।

20. विकास कार्य

मन्दिर मण्डल द्वारा आगन्तुक वैष्णवों की सुविधार्थ आधारभूत संरचनाओं के विकास यथा – आवास, परिवहन, स्वच्छता, प्रकाश, विद्युत, जन–स्वास्थ्य, खेलकूद इत्यादि क्षेत्रों में मंदिर मण्डल द्वारा प्रतिवर्ष अनवरत प्रयास कर समस्त सुविधाएं सृजित की गई हैं तथा स्थानीय क्षेत्रीय विकास तथा आपदा के समय पर राहत के रूप में अनेकानेक कार्य किये जाते हैं।

21. मुख्य मनोरथ

श्रीनाथजी मंदिर में विभिन्न मनोरथ करवाये जा सकते हैं, जिनमें मुख्य निम्न हैं –

क्र.सं.	नाम मनोरथ	वर्तमान न्योछावर
1.	दिनभर का मनोरथ	17,300/–
2.	पूरा राजभोग	10,350/–
3.	आधा राजभोग	6,700/–
4.	पाव राजभोग	5,200/–
5.	मंगलभोग	1250/–
6.	शयनभोग	920/–
7.	गौ–माताजी	2561/–
8.	सुर्दशन सेवा	91/–
9.	माखन मिश्री	190/–

22. नियत सामग्री

आनन्दकन्द प्रभु श्रीनाथजी की सर्वोत्तम सेवार्थ वैष्णव मनोरथानुसार एक नियत दिनांक को संकल्प कर विशेष भोग ठाकुरजी को अरोगाने हेतु नियत राशि एक बार एक मुश्त जमा करवाकर उक्त आयोजन 'नियत सामग्री योजना' के अन्तर्गत करवाया जा सकता है।

23. श्रीजी के मनोरथ एवं न्योछावर राशि

श्रीनाथजी मंदिर में एक मुश्त राशि जमा होने पर प्रतिवर्ष नियत दिनांक को विभिन्न मनोरथ करवाये जा सकते हैं, जिनमें मुख्य निम्न हैं –



क्र.सं.	नाम मनोरथ	वर्तमान न्योछावर
1.	दिनभर का मनोरथ	1,40,000/–
2.	पूरा राजभोग	75,000/–
3.	आधा राजभोग	51,000/–
4.	पाव राजभोग	35,000/–
5.	मंगलभोग	10,000/–
6.	शयनभोग	14,000/–
7.	प्रियाजी पलना मनोरथ	45,000/–
8.	गौ–माताजी थूली सेवा	90,000/–

ब्याज दरों के परिवर्तन अध्याधीन है।

24. आवास व्यवस्था

मन्दिर मण्डल द्वारा वैष्णव/यात्रियों के आवास हेतु विभिन्न आवास गृहों को विकसित किया गया है जिसमें मुख्यतः न्यू कॉटेज, धीरजधाम, चितलवाला विश्रांति गृह, बालासिनोर सदन, दिल्लीवाली धर्मशाला, आशुभाई धर्मशाला, छोटी धर्मशाला, सखीबाई धर्मशाला, केशवभवन धर्मशाला, लक्ष्मीनिवास धर्मशाला, डायाभवन धर्मशाला, देलवाड़ावाली धर्मशाला आदि हैं। कॉटेजेज की अग्रिम बुकिंग की सुविधा उपलब्ध है, जिसके लिए टेलीफोन नं. 02953–233677 पर सम्पर्क किया जा सकता है।



25. विभिन्न उद्यान

प्रभु श्रीनाथजी के ब्रज स्वरूप सुरम्य नगरी में सुन्दर कलात्मक व भावनात्मक के प्रतीक कई उद्यान हैं। इन सारे उद्यानों को श्रीनाथजी के विहार स्थल के रूप में बनवाये गये थे। जहां श्रीनाथजी की लीलाओं के परिदृश्य आज भी दृष्टिगोचर होते हैं।

यहां के सारे उद्यान वल्लभ परिवार की निजी सम्पत्ति थे किन्तु नि.ली. ति.गो. श्रीगोविन्दलालजी महाराजश्री ने अधिकतर उद्यान जनहित में सरकार व समाज को सौंप दिये। तीर्थ स्थान होने से पर्यटक, धार्मिक तीर्थयात्री इन उद्यानों को देखकर आनन्दित हो जाते हैं।

यहां के उद्यानों में **'लालबाग'** प्रमुख है। इस उद्यान में मूर्तिकला, चित्रकला व उद्यानकला दर्शनीय है। इसी में एक महाराज श्री का महल है, पीछे खेल का बड़ा मैदान भी है। वर्तमान में खेल मैदान भारत सरकार व राज्य सरकार के खेल विभाग के सहयोग से श्री दामोदर स्टेडियम को विस्तृत रूप में विकसित किया गया है। यहां राष्ट्रीय व राज्य स्तर की प्रतियोगिताएं तथा सोमयज्ञादि कार्य किये जाते हैं।

यहां के महल में **'श्रीनाथजी म्यूजियम'** है जिसमें पुराने सामान आदि संग्रहित कर यात्रियों के दर्शनार्थ रखे हुए हैं।

बगीचे के मध्य में **'श्रावण भादवा'** नाम का बगीचा है जहां कलात्मक ढंग के फव्वारे एवं लता पतादि का मनोरथ दिखाई देता है। बाग के मध्य में जल का फव्वारा है इसके पास एक तिबारी है आगे लीला विहार श्रीकृष्ण की मूर्तियां बनाकर वाटिका के समान सुसज्जित बनाया गया है। इसी के पास कैलाश पर्वत के ऊपर शिवजी का प्राकृतिक रूप में गंगावतरण का दृश्य बनाया गया है। बाग में श्रीठाकुरजी पधराकर कई मनोरथ आयोजित किये जाते हैं। यहां तुलसी, जामुन, चंदन, केले आदि के वृक्ष व पौधे हैं, यह सब श्रीनाथजी के मंदिर में पधराये जाते हैं।

आगे कांकरोली मार्ग पर **'वृन्दावन बाग'** है। यहां पर आम, जामुन के बहुत से वृक्ष हैं तथा लता कुंजों की बनावट दर्शनीय है। यहां की **'सेवा'** सामग्री श्रीनाथजी के मंदिर में जाती है। यहां पर सार्वजनिक मेले लगते हैं।

तीसरा प्रमुख उद्यान **'कछवाई बाग'** है। इस बगीचे की रचना में वृन्दावन के कुंजों की–सी झलक देखने को मिलती है। पानी का प्राकृतिक नाला ऊपर से बहता हुआ आता है। इसमें कई बावड़ियां हैं तथा आम के बहुत से पेड़ हैं। एक सुन्दर भ्रमण स्थल **'घटियावाला बाग'** हैं, इसके पास वाले बाग को **'चौपीता का बाग'** भी कहा जाता है जो श्रीविट्ठलनाथजी के महाराजश्री की सम्पत्ति है। बनास नदी के तट पर **'गणगौर घाट'** नामक सुन्दर स्थल बगीचे के समान है, यहां सुन्दर महल भी है, जहां महाराजश्री गण गौर मेले के अवसर पर विराजते हैं। नगर से 4 कि.मी. दूर ओडन

गांव में एक बगीचा है। नगर के मध्य में एक बड़ाबाग नामक पब्लिक पार्क है। इसमें नगरपालिका का कार्यालय है। इसमें महात्मा गांधी की आदमकद मूर्ति है। एक बगीचा ट्यूरिस्ट बंगले के पास है जिसे **'मुखियाजी की बाड़ी'** के नाम से जाना जाता है। यहां भी फलदार वृक्ष हैं तथा खेती भी की जाती है।

इन सबके अलावा एक बहुत ही सुन्दर व ऐतिहासिक उद्यान **'यशोदानन्दन बाग'** के नाम से जाना जाता है। यह निजी उद्यान है परन्तु अन्य उद्यानों से अपनी अलग पहचान बनाये हुए है। यह बनास नदी के पुल समीप स्थित है, इसे प.भ. काराणीजी ने बनवाया है। यहां अष्ट सखाओं की संगमरमर की सुन्दर मूर्तियां बनवाकर दर्शनार्थ रखी हुई है।

धार्मिक पर्यटन स्थल नन्दनवन – गिरिराजेश्वर पर्वत की छत्रछाया व प्राकृतिक परिवेश की हरीतिमा से आच्छादित नन्दनवन बाग जो निजी उद्यान हैं को धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में भी देख सकते हैं। जहां भगवान् श्रीकृष्ण की विविध भाव प्रसंगों पर आधारित कलाकृतियां व प्रतिमाएं इस रूप में संयोजित है कि पूरा परिवेश कृष्णमय भाव में रचा–बसा प्रतीत होता है, वैष्णव भक्त व उद्योगपति मोहन भाई भाटिया श्रीनाथजी की प्रेरणा से इसे सुन्दरतम बनाने के लिए प्रयासरत है।

नाथद्वारा धार्मिक नगरी होने से यहां के उद्यान भी अपनी अलग से पुष्टिमार्गीय भावनात्मक रूप से पहचान लिए हुए है।



26. श्रीनाथ गौशाला

हमारे यहां गाय को गौमाता कहा जाता है, अतः सबकी परम वंदनीया मानी जाती है। श्रीमद्भागवत में भगवान् वेदव्यास ने धरती माता को गाय का रूप बतलाकर गाय की सर्वोच्च महत्ता स्थापित की है।

भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म पर गौ–शृंगार, गौ–पूजन और गौदान का वर्णन है। श्रीकृष्ण का क्रीडारम्भ बछड़े की पूंछ पकड़ने के साथ ही हुआ था।

वल्लभ सम्प्रदाय की प्रधान पीठ नाथद्वारा तो गायों का घर है, क्योंकि इस सम्प्रदाय में गाय और गोपाल दोनों को ही प्रधानता दी जाती है। अतः ब्रजराज श्रीनाथजी के नाथद्वारा आगमन के साथ ही नगर में गौशालाएं बनने लगी थीं।

श्रीकृष्ण स्वरूप श्रीनाथजी को गायें बहुत प्रिय हैं। नाथद्वारा में नाथूवास श्रीनाथजी की प्रधान गौशाला है। यह गौशाला बहुत विस्तृत रूप में हैं। यहां हजारों गायें, बछड़े, भैंस व पाड़े हैं। यहां विशेष रूप से दुधारू गायें रखी जाती है। जिससे मंदिर में ठाकुरजी के लिए दूध पधराने में विलम्ब न हों। यहां एक कक्ष में नंदवंश की गाय है, जो अन्नकूट के अवसर पर अन्य गायों के साथ श्रीनाथजी के मंदिर आती है और गोवर्द्धन पूजा के चौक में महाराज श्री द्वारा पूजी आती है। यात्री और भक्तगण गौशाला में इसका दर्शन करते हैं, पूजा करते हैं और इसके नीचे से निकलने की परम्परा है। गौशाला के विशाल

परिसर के मध्य में एक स्थान ऊंचाई पर बना हुआ है। यात्रीगण यहां से गायों के दर्शन करते हैं। गायों को थूली, दलिया, गुड़ खिलाने के लिए चिरें बनी हुई है। गायें अपने कक्षों से दौड़ती हुई चिर के पास पहुंचती है, उस समय उनके गले में बंधी हुई ताम्बे, पीतल आदि की घण्टियां और टोकरों में बजती हुई सुमधुर स्वर लहरियां सारे वातावरण को संगीतमय बना देती है। गोपाष्टमी के दिन यहां विशाल मेला लगता है। महाराजश्री पधारते हैं। नागरिकों, यात्रियों और दर्शकों से गौशाला की सभी छतें भर जाती हैं।

नाथूवास के अतिरिक्त श्रीनाथजी की ग्यारह और गौशालाएं हैं। ऊपरी ओडन में श्रीनाथजी की दो गौशालाएं हैं। ये विशाल और पक्की बनी हुई है तथा गायों के लिए चारा–दाना–पानी की पूरी व्यवस्था है।

यहां से चार किलोमीटर दूर बागोल गांव में श्रीनाथजी की दो गौशालाएं हैं, ये दोनों भी पक्की और विशाल है। यहां भी बढ़िया चिर बनी हुई है। छाया–पानी की पूरी व्यवस्था है।

एक गौशाला खमनोर मार्ग पर टांटोल गांव में है। इस गौशाला का परिसर बहुत सुन्दर और विशाल होने के साथ–साथ रख–रखाव की अच्छी व्यवस्था है।

एक गौशाला नाथद्वारा–मावली मार्ग पर मोगाना गांव में है। यह भी पक्की, मजबूत और विशाल है। छाया के लिए परिसर में टीन शेड लगा हुआ है। चिर और प्याऊ की व्यवस्था है।

ग्रामीण क्षेत्र में 'खटूकड़ा' गांव में भी श्रीनाथजी की दो मंजिली विशाल एवं पक्की बनी हुई गौशाला है। यहां पर श्रीनाथजी का विशाल बीड़ा है। यहां चिर और प्याऊ की उचित व्यवस्था है। नाथद्वारा से उदयपुर होकर उत्तंग पर्वत शिखरों में स्थित 'ब्याल' (उभयेश्वर) नामक सुन्दर स्थान पर भी श्रीनाथजी की एक गौशाला है। एक गौशाला घस्यार में भी है। इन गौशालाओं में कई प्रकार की जाति की गायें रहती हैं। खास करके मारवाड़ी, काठियावाड़ी, अजमेरी, मेवाड़ी, कांकरेज और गिर नामक गायें रहती हैं। इसके अलावा बाहर से भेंट आने वाली अन्य नस्लों की गायें भी हैं। यहां गौशाला में गायों के नाम भी रखे जाते हैं तथा बछियाओं के भी नाम रखे जाते हैं। नाम पुकारते ही गायें अपने ग्वालों के निकट आ जाती है। गायों के मुख्य नाम – जमना, रूकमणी, महारानी, गंगा, कालवंश, सुरही, माना गाय, धूमर, काजल, मनेठी, महावन, हीरा, नारणी, त्रिवेणी, कस्तूरी, कालिंदी और गेण हैं।

गोसंवर्धन के साथ गायों के स्वास्थ्य का भी पर्याप्त ध्यान रखा जाता है। गायों की समय–समय पर देखभाल के लिए एक डॉक्टर की भी नियुक्ति है। जो देशी व विदेशी पद्धतियों से गायों की चिकित्सा करते हैं।

श्रीनाथजी की इन गौशालाओं से कोई पशु बाहर बेचा नहीं जाता, न ही यहां से दूध बेचा जाता है। सारा दूध श्रीनाथजी की

सेवामें गागर में ढक कर सेवामें पहुंचाया जाता है।

कभी–कभी मध्यरात्रि में यकायक गौशाला की गायें रंभाना शुरू कर देती है और इधर–उधर दौड़ने लगती है। भक्त ग्वालों का विश्वास है कि उस समय श्रीनाथजी ही इस गोलोक में पधारते हैं। अतः प्रभु श्रीकृष्ण स्वरूप श्रीनाथजी का प्रेम प्राप्त करने के लिए गायें यत्र–तत्र दौड़ती है। प्राचीन समय में तो कई ग्वालों ने गऊओं के साथ खेलते हुए भगवान् श्रीनाथजी के प्रत्यक्ष दर्शन भी किये हैं।

इस गोलोक स्वरूप गौशालाओं के सम्पूर्ण देख–रेख, सार–संभाल हेतु मंदिर मण्डल पूर्ण निष्ठा के साथ सेवा में रहता है।



27. नाथद्वारा के अन्य पुष्टिमार्गीय स्वरूप

श्री नवनीत प्रियजी का मंदिर – श्री नवनीत प्रियजी महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी की पृथ्वी परिक्रमा करते हुए महावन पधारे, वहां एक क्षत्राणी ने अपने चार स्वरूप श्रीमहाप्रभुजी को समर्पित किये उनमें श्रीनवनीतप्रिय भी थे। आगरा निवासी गज्जन धावन के मस्तक पर श्रीमहाप्रभुजी ने श्री नवनीतप्रियजी को पधराये। श्रीनवनीतप्रियजी गज्जन धावन के साथ बालक्रीड़ा करते थे। श्रीमहाप्रभुज़ी की दूसरी पृथ्वी परिक्रमा में पूरे समय उनके साथ रहे। जब श्रीनाथजी गिरिराजजी से उठे और आगरा पधारकर गुप्त रूप से अन्नकूट अरोगा उस समय अन्नकूटोत्सव में आप सम्मिलित हो गये, तभी से आप श्रीनाथजी के साथ हैं।

श्रीविट्ठलनाथजी का मंदिर – पुष्टिमार्ग की द्वितीय–पीठ जहां युगल–स्वरूप की सेवा होती है।

श्रीमदनमोहनजी का मंदिर – मेवाड़ महाराणा श्रीफतेहसिंहजी की राणी के सैव्य ठाकुरजी, जिन्हें तिलकायत श्री १०८ श्री गोवर्धनलालजी महाराज को सेवार्थ समर्पित किया गया था।

श्रीवनमालीजी का मंदिर – यह मंदिर श्रीनाथजी के नगार खाने के पास है, यहां श्रीनाथजी के समान ही लघु स्वरूप विराजमान है।

28. श्रीनाथजी मंदिर के अन्य दर्शनीय स्थल

श्री ध्वजाजी के दर्शन – प्रभु श्रीनाथजी के निज मंदिर के ऊपर स्थित शक्ति–स्वरूप श्रीसुदर्शन चक्र पर पुष्टिमार्ग के प्रधान पीठ की द्योतक सप्त ध्वजाएं।

श्रीमहाप्रभुजी की बैठक – श्रीमहाप्रभुजी के प्रतीक चिन्ह के रूप में दर्शनीय–स्थल जो मोती महल के अन्दर है।

श्रीनाथजी के रथ – मोती महल के चौक में दर्शनार्थ रखे प्राचीन रथ हैं। रथों की तत्कालीन बनावट व सुन्दरता देखने योग्य है। रथों पर लगी घंटियों का स्वर सप्तस्वरों की ध्वनियों से ध्वनित होता है। प्रभु श्रीनाथजी को गोस्वामी तिलकायक श्रीदाऊजी महाराज ने नाथद्वारा में पधराया था। ये वे ही रथ हैं।

सोने व चांदी की चक्की – श्रीकृष्ण भण्डार के द्वार पर स्थित प्रभु श्रीनाथजी की नित्यसेवा में काम आने वाली केसर व कस्तुरी को पीसने के काम आती है।

श्रीकृष्ण भण्डार – इसमें प्रभु श्रीनाथजी की आय–व्यय का हिसाब तथा जिन्सों का भण्डारण किया जाता है। महाराजश्री के प्रतिनिधि के रूप में श्री अधिकारीजी वैष्णवों को यहां कण्ठी डोरा भी देते हैं।

विद्या विभाग – इस विभाग की स्थापना ति. श्री गोवर्धनलालजी महाराजश्री ने की थी। इस विभाग से प्रतिवर्ष टिप्पणी व पंचांग का प्रकाशन होता है तथा अन्य सभी पुष्टिमार्गीय–ग्रंथ प्रकाशन इसी विभाग से होते हैं।

प्रचार–प्रसार प्रकोष्ठ – यह विद्या विभाग नाथद्वारा के अन्तर्गत है। जहां वैष्णव धर्म का प्रचार प्रसार कार्य होता है त्रैमासिक पत्रिका पुष्टिमार्ग का प्रकाशन किया जाता है।

गोविन्द वाचनालय – धोली पटिया पर स्थित है। आजकल यहां लालाजी बिराज रहे हैं।

गोवर्धन पुस्तकालय – पुष्टिमार्ग से सम्बन्धित पुस्तकों का यहां संकलन है। श्रीगोवर्धन पुस्तकालय से न्योछावर से टिप्पणी एवं पंचांग तथा सम्प्रदाय की पुस्तकें मिलती है।

श्रीनाथ संगीत शिक्षण केन्द्र – मोती महल में स्थित है। परम्परागत हवेली संगीत का प्रशिक्षण केन्द्र है।

श्रीखर्च भण्डार – प्रभु श्रीनाथजी की सेवा में आवश्यक जिन्सों का विशाल भण्डार है, जिसमें घी के प्राचीन कुएं अभी भी सुरक्षित है। मेवाड़ में पधारते ही सर्वप्रथम यहां श्रीनाथजी, निज मंदिर निर्माण पूरा होने तक बिराजे थे।

श्रीनाथ म्यूजियम – यह 2 कि.मी. दूर लालबाग में स्थित है। जहां श्रीनाथ मंदिर से सम्बन्धित पुरातन पारम्परिक बर्तन, औजार, रथ, चक्की, विभिन्न चित्र वंशावली प्रदर्शित है।

अन्य महत्वपूर्ण विभाग –

पान–घर – यहां पर श्रीनाथजी के पान (ताम्बूल) की सेवा होती है।

फूल–घर – प्रभु के लिए फूलों की मालाओं को पिरोया जाता है। श्रृंगार के दर्शन में फूलघर के लालाओं को खेलने हेतु आवाज दी जाती है।

शाक–घर – यहां पर फल सेवा एवं शाक सेवा को सिद्ध करते हैं। यहां वैष्णव सेवा के साथ हरियश गान में तल्लीन रहते हैं।

29. नाथद्वारा के अन्य दर्शनीय स्थल

साहित्य–मण्डल – अष्टछाप कवियों से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी हेतु चित्रमय अष्टछाप कक्ष है। प्रभु श्रीनाथजी की ब्रज से मेवाड़ यात्रा का सजीव चित्रण है।

अन्य स्थल – गणेश टेकरी, रामभोला, श्रीयशोदानन्दन बाग, नन्दनवन, गिरिराजेश्वर महादेव, सुखाड़िया पार्क एवं यमुनाजी की प्रतीक विशाल बनास नदी आदि।

30. नाथद्वारा के आसपास के दर्शनीय स्थल

प्राचीन घसियार मन्दिर – नाथद्वारा से 40 कि.मी. दक्षिण में स्थित श्रीनाथजी का प्राचीन मंदिर जहां प्रभु श्रीनाथजी 5 वर्ष 2 माह बिराजे थे। यह मन्दिर नाथद्वारा मंदिर की पूर्ण प्रतिकृति है। वर्तमान में यहां चित्र सेवा होती है।

श्रीनाथजी की हवेली – उदयपुर नगर के मध्य भाग, कानजी का हाटा क्षेत्र में निर्मित विशाल हवेली है। प्रभु श्रीनाथजी यहां पर दस माह बिराजे थे। वर्तमान में यहां चित्रजी की नियमित सेवा होती है। यात्रियों के लिए आवास व्यवस्था भी उपलब्ध है।

श्रीहरिरायजी की बैठक – नाथद्वारा से 15 कि.मी. दूर खमनोर में स्थित श्रीहरिरायजी महाराज की बैठक है।

श्रीचारभुजाजी का मंदिर – नाथद्वारा से 52 कि.मी. दूर राष्ट्रीय राजमार्ग 8, अजमेर मार्ग पर स्थित मेवाड़ का प्रसिद्ध मन्दिर व धाम है।

हल्दीघाटी व चेतक स्मारक – नाथद्वारा से खमनोर होकर उदयपुर जाने वाले मार्ग पर 17 कि.मी. दूर स्थित विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध स्थल महाराणा प्रताप के स्वातंत्र्य प्रेम व संघर्ष की साक्षी रक्त तलाई, स्वामी भक्त चेतक का स्मारक, शाहीबाग एवं चैत्री गुलाब का कृषि स्थल हैं।

एकलिंग महादेव का मंदिर – नाथद्वारा–उदयपुर राजमार्ग सं. 8 पर स्थित उदयपुर राजघराने द्वारा सेव्य एकलिंग महादेव का जगप्रसिद्ध मंदिर है। प्रसिद्ध सास–बहू का मंदिर भी पास में है।

कांकरोली

श्रीद्वारकाधीश का मंदिर – नाथद्वारा से उत्तर में 16 कि.मी. दूर राष्ट्रीय राजमार्ग पर कांकरोली स्थित भगवान् द्वारकाधीश का मंदिर एवं पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय की तृतीय पीठ है। पास में विशाल राजसमन्द झील, नौ–चौकी की पाल है।



31. वैष्णवों के पालन करने योग्य 'नियम'

1. तुलसी की कंठी और तिलक सर्वदा धारण करना।
2. आचार विचार सर्वथा शुद्ध रखना।
3. भगवान् श्रीकृष्ण में परम विश्वास रखना और सदा श्रीकृष्ण का आश्रय (सहारा) समझना।
4. असमर्पित वस्तु का सर्वथा त्याग करना अर्थात् श्रीठाकुरजी को समर्पण किये बिना किसी वस्तु का उपभोग न करना।
5. अपने सम्प्रदाय में सर्वोच्च भाव रखना।
6. गौ, ब्राह्मण एवं वैष्णवों की यथाशक्ति सहायता (सेवा) करना।
7. भगवत् शास्त्रों का (मुख्यतः श्रीमद्भागवत, श्रीमद्भगवतगीता) का श्रवण पान स्वमार्गीय षोडश, ग्रंथादि का पाठ प्रतिदिन अवश्य करना, सेवा के समय के अनुसार कीर्तन करना, अनोसर में वेणु–गीत युगलगीत–गोपीगीत का गान करना।
8. रात्रि के समय नित्य वैष्णवों का सत्संग करना, 84 एवं 252 वैष्णवों की वार्ता, शिक्षा–पत्रादि बांचना, भगवन्नाम कीर्तन करना तथा आश्रय के पद गाना।
9. दुःसंग से बचने की चेष्टा करना।
10. ब्रह्म सम्बन्ध का सर्वथा ध्यान रखना –
    जगत् प्रभु का क्रीड़ा क्षेत्र होने के कारण सत्य है। अहंता ममता का दृढ़ आरोप, मैं, और मेरा का संकल्प किया हुआ अपना संसार झूठा है। क्योंकि ब्रह्म सम्बन्ध के समय हमने अपना समझा हुआ व्यवहार भगवान् को अर्पण कर दिया है।
11. अपने को श्रीकृष्ण का दास समझ कर दीनता रखना और अभिमान का सर्वथा त्याग करना।

12. श्रीकृष्ण की परिचर्या (सेवा) को ही अपना मुख्य कर्तव्य समझ कर सुविधानुसार स्वरूप सेवा अथवा चित्र सेवा नित्य करना।
13. सभी से द्वेष रहित हो जाना क्योंकि प्रभु सदा सर्वत्र सभी में विराजमान हैं।
14. ब्रह्म सम्बन्ध (गद्य) मंत्र का स्मरण–विचार, तादृश वैष्णवों के संग अपरस में करना।
15. अष्टाक्षर मंत्र 'श्रीकृष्णः शरणं मम' का निरन्तर स्मरण सुविधानुसार जप एवं कीर्तन करना। (अपरस आवश्यक नहीं)
16. जीवन में कम से कम एक बार चंपारण्य (जि. रायपुर) श्रीमहाप्रभुजी का प्राकट्य स्थल श्रीनाथद्वारा तथा सातों निधियों के विराजने के स्थलों को दर्शनार्थ अवश्य जाना और ब्रजयात्रा करना।
17. प्रत्येक एकादशी एवं चारों जयन्तियां (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्रीरामनवमी, श्रीवामनद्वादशी, श्रीनृसिंह जयन्ती) को व्रत रखना।
18. स्वमार्गीय मंदिरों में दर्शनार्थ नित्य अवकाशानुसार जाना। उत्सवों में अवश्य जाना। अपने गुरुदेव का जन्मोत्सव मानना, हो सके तो उत्सव निर्मित वैष्णव मंडली बुलाना और बधाई गान करना।
19. भगवान् ने हमारी योग्यता के अनुसार जो कुछ दिया है उसमें संतोष करना और जो कार्य दिया है उसको आज्ञा मानकर भली भांति करना।
20. संकट आने पर धीरज रखना, घबराना नहीं। **'सुख दुःख की गति भाग सो अपने आन पड़े सो सहिए, मेरे मन गोविन्द के होय रहिये।'** (श्रीसूरदासजी)
21. अन्याश्रय नहीं करना।



32. वैष्णवों के लिए संभावित माननीय साम्प्रदायिक 52 उत्सव

1.	डोल (उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में)	चैत्र वदी एकम या द्वितीया
2.	नया सम्वत्	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
3.	गणगौरी	चैत्र सुदी तीज
4.	छट्ठेलालजी यदुनाथजी का उत्सव	चैत्र सुदी षष्ठी
5.	रामनवमी का उत्सव	चैत्र सुदी नवमी
6.	श्रीमहाप्रभुजी का उत्सव	वैशाख वदी एकादशी
7.	अक्षय तृतीया का उत्सव	वैशाख सुदी तृतीया
8.	गंगा दशहरा का उत्सव	ज्येष्ठ सुदी दशमी
9.	स्नानयात्रा (ज्येष्ठा नक्षत्र में) का उत्सव	ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा
10.	रथयात्रा (पुष्य नक्षत्र में) का उत्सव	आषाढ़ सुदी द्वितीया या तृतीया
11.	कसुम्बी छठ का उत्सव	आषढ सुदी षष्ठी
12.	व्यास पूर्णिमा का उत्सव	आषाढ सुदी पूर्णिमा
13.	हिण्डोलारम्भ का उत्सव	श्रावण वदी प्रतिपदा
14.	हरियाली अमावस्या का उत्सव	श्रावण वदी अमावस्या
15.	ठकुरानी तीज का उत्सव	श्रावण सुदी तीज
16.	नागपंचमी का उत्सव	श्रावण सुदी पंचमी
17.	पवित्रा एकादशी (ब्रह्मसंबंध जयंती)	श्रावण सुदी एकादशी
18.	रक्षाबन्धन का उत्सव	श्रावण सुदी पूर्णिमा
19.	षष्ठी उत्सव का उत्सव	भादौ वदी सप्तमी
20.	श्री जन्माष्टमी नन्द महोत्सव	भादो वदी अष्टमी, नवमी
21.	श्री चन्द्रावलीजी का उत्सव	भादो सुदी पंचमी
22.	श्री ललिताजी का उत्सव	भादो सुदी षष्ठी
23.	श्री कुमारिकाजी का उत्सव	भादो सुदी सप्तमी
24.	श्री राधा अष्टमी का उत्सव	भादो सुदी अष्टमी
25.	श्रीदान एकादशी का उत्सव	भादो सुदी एकादशी
26.	साझी का आरम्भ का उत्सव	भादो सुदी पूनम
27.	श्री हरिरायजी का उत्सव	आश्विन वदी पंचमी

28.	श्रीमहाप्रभुजी के पौत्र श्रीपुरुषोत्तमजी का उत्सव	आश्विन वदी अष्टमी
29.	श्रीमहाप्रभुजी के पुत्र गोपीनाथजी का उत्सव	आश्विन वदी द्वादशी
30.	श्रीगुसांईजी के तीसरे लालजी बालकृष्णजी का उत्सव	आश्विन वदी त्रयोदशी
31.	नवरात्र आरम्भ	आश्विन सुदी प्रतिपदा
32.	विजयादशमी (दशहरा) का उत्सव	आश्विन सुदी दशमी
33.	शरद पूर्णिमा का उत्सव	आश्विन सुदी पूर्णिमा
34.	धनतेरस का उत्सव	कार्तिक वदी त्रयोदशी
35.	रूप चतुर्दशी का उत्सव	कार्तिक वदी चतुर्दशी
36.	दीपावली का उत्सव	कार्तिक वदी अमावस्या
37.	अन्नकूटोत्सव का उत्सव	कार्तिक सुदी प्रतिपदा
38.	भाई दूज का उत्सव	कार्तिक सुदी दूज
39.	गोपाष्टमी का उत्सव	कार्तिक सुदी अष्टमी
40.	अक्षय नवमी का उत्सव	कार्तिक सुदी नवमी
41.	प्रबोधिनी एकादशी का उत्सव	कार्तिक सुदी एकादशी
42.	प्रथमलालजी गिरधरजी तथा पंचमलालजी रघुनाथजी का उत्सव	कार्तिक सुदी द्वादशी
43.	गोपमासारंभ व्रतचर्या	मार्गदशीर्ष वदी प्रतिपदा
44.	द्वितीयलालजी गोविन्दजी का उत्सव	मार्गशीर्ष वदी अष्टमी
45.	सप्तमलालजी घनश्यामजी का उत्सव	मार्गशीर्ष वदी त्रयोदशी
46.	चतुर्थलालजी गोकुलनाथजी का उत्सव	मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी
47.	बलदेवजी का उत्सव	मार्गदशीर्ष सुदी पूर्णिमा
48.	श्रीगुसांईजी का उत्सव	पौष वदी नवमी
49.	होरी डांडा का उत्सव	माघ सुदी पूर्णिमा
50.	श्रीनाथजी का पाटोत्सव	फाल्गुन वदी सप्तमी
51.	कुंज एकादशी	फाल्गुन सुदी एकादशी
52.	होली का उत्सव	फाल्गुन सुदी पूर्णिमा

33. श्रीनाथजी एवं अष्ट समय के दर्शनों का भाव

श्रीनाथजी को मूर्ति या प्रतिमा मानकर पूजा नहीं की जाती वरन् साक्षात् बाल स्वरूप मानकर **'सेवा'** की जाती है। भगवान् श्रीनाथ बाल स्वरूप श्रीकृष्ण हैं, अतः उनका निवास भी नन्दबाबा का प्रासाद है, घर है, अन्य देवालयों की तरह मंदिर नहीं है, उस पर शिखर नहीं है और निज मंदिर के ऊपर खपरेल की कच्ची छत है।

भागवत प्रतिपादित श्रीकृष्ण की वात्सल्य एवं कान्त भाव से उपासना होती है। **यशोदोत्संग लालित्य भाव** की प्रधानता है। श्रीकृष्ण की ब्रज मण्डल की लीलाओं को वल्लभ सम्प्रदाय की सेवा में लिया जाता है। पुष्टि उपासना में मथुरा और द्वारिका की लीलाओं को गोण रखा है। श्रीकृष्ण और गिरिराज पर प्रकट श्रीनाथजी में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं मानी जाती है। सब कुछ प्रभु का ही है, ऐसा समझ, सर्वस्व अर्पण कर उन्हें प्रसन्न करने और सुख पहुंचाने का सदैव प्रयास करने का भाव रखा जाता है।

जिस प्रकार शिशु की सेवा हम दिन–रात करते हैं, उसके सुख का विचार कर उत्तमोत्तम वस्तुएं उसके लिए जुटाते हैं, उसी प्रकार श्रीनाथजी की सेवा का भी विधान है। ग्रीष्मकाल में चन्दन, गुलाब जल आदि अर्पण किए जाते हैं। शीतकाल में प्रभु को गद्दर तथा रात को रजाई धराई जाती है।

भोग : श्रीजी का भोग विशुद्धता, विविधता व ऋतु अनुकूलता की दृष्टि से सर्वोपरि है। श्रीजी के सेवकों द्वारा सेवाभाव से तैयार किये गए प्रसाद में कई प्रकार के भात, कई प्रकार की खीर, थूली, हलुआ, सेव, बिलसारू, कढी, चूरमा, रसदार शाक, अनेक प्रकार के

छुकमा शाक, रोटी, सत्तु, अनेक प्रकार के लड्डू, ठोर, बरफी, पेड़ा, सुहागसोंठ, मलाई, पूड़ियां आदि होते हैं। भोग में लगभग सभी प्रकार के मेवे, केसर, कस्तुरी, अम्बर आदि मूल्यवान पौष्टिक पदार्थों का प्रयोग किया जाता है। शाकों में काली मिर्च और सेंधा नमक का ही प्रयोग होता है। साक्षात् बाल स्वरूप के लिए ऋतु एवं समयानुसार सुरूचिपूर्ण पौष्टिक भोग तैयार किए जाने का विधान है।

समस्त तैयार किया गया भोग श्रीनाथजी के सम्मुख निज कोठे में पधराया जाता है। उसके बाद वहां कोई व्यक्ति नहीं रहता। केवल बाहर कीर्तनियां गली में कीर्तन होता रहता है। कुछ समय बाद वहां से भोग सरा लिया जाता है और दर्शन खुल जाते हैं।

श्रृंगार : श्रीनाथजी के स्वरूप का श्रृंगार अपनी भव्यता, कलात्मकता और अलौकिक सुन्दरता में अद्वितीय है। वस्त्रों, बहुमूल्य आभूषणों, मणि–माणिक्यों, पुष्पहारों आदि से अलंकृत भगवान् श्रीनाथजी की बांकी छटा सचमुच वैष्णवों का मन मोह लेती है। श्रृंगार धराते समय कलात्मक अभिरूचि और स्नेह सेवा–भाव सतत् जागरूक रहते हैं। रंगों का मेल ऐसा रखा जाता है कि वह एक ओर छविधाम आनन्दकन्द की अतुलित कांति में अभिवृद्धि करता है तो दूसरी ओर ऋतु के अनुसार होने के कारण सुख और शांति देता है। श्रृंगार में लाखों रुपये की मूल्य वाली पिछवाइयां और अत्यधिक मूल्यवान जवाहरातों का प्रयोग किया जाता है। श्रृंगार गोस्वामी तिलकायत अथवा उनके द्वारा नियुक्त मुखियाओं द्वारा ही धराया जाता है, उस समय अन्य कोई भी व्यक्ति श्रीजी के दर्शन नहीं कर सकता। प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक समय समय पर ऋतु के अनुसार सतुआ, अमरस, खीर, दूध, दही, माखन, मिश्री, मेवा आदि

उत्तमोत्तम भोग धराए जाते हैं। वस्तुतः श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध के **"यद्यदिष्टतमं लोके यच्चातिप्रियमात्मनः। तत्तन्निवेदयेन्मह्यम्"** अनुसार सारी सेवा की जाती है।

नैमित्तिक सेवा–क्रम में बाल–कृष्ण के जागरण से लेकर शयन पर्यन्त सम्पूर्ण लीलाओं का समावेश रहता है। श्रीनाथजी मंदिर में सेवा–विधि तथा उसके क्रम का निश्चित विधान है, जिसमें प्रतिदिन की सेवा विधि के साथ ही साथ वर्ष के सम्पूर्ण उत्सवादिकों पर की जाने वाली सेवा का निर्धारण है।

पुष्टिमार्गीय सेवा राग, भोग और श्रृंगार पर आधारित है। यही तीनों मानवीय प्रवृत्तियां हैं जो मन को सांसारिकता में आसक्त करती है, वल्लभीय सेवा में इनकी दिशा परिवर्तित हो गई है। यहां राग, भोग और श्रृंगार सभी कुछ भगवान् श्रीकृष्ण के लिए है। आसक्ति है किन्तु आनन्द धाम श्रीनाथजी के प्रति। इन तीनों की व्यवस्था श्रीनाथ मंदिर में अति भव्य और सुन्दर है।

राग : श्रीनाथजी की प्रत्येक झांकी और समय के अनुसार अष्टछाप के कवियों, "जिनमें सूरदास, नन्ददास, कृष्णदास, कुम्भनदास, छीतस्वामी और परमानन्ददास मुख्य है" के पद बड़े मधुर स्वर में शास्त्रीय विधि से गाए जाते हैं। इन पदों में वर्णित श्रृंगार ही श्रीजी को धराया जाता है, इन्हीं के अनुसार भोग अरोगाया जाता है। जिस प्रकार अतिप्रेमास्पद बालक को सभी लोग प्रेम और आदर देते हैं, उसे प्रिय से प्रिय वस्तु भी भेंट करते हैं उसी प्रकार यहां भी प्रभु की सेवा सर्वाधिक भाव से की जाती है। किस रीति से परिचर्या करने से प्रभु को विशेष सुख होगा यही विचार सेवा करने वाले को निरन्तर बना रहता है।

श्रीनाथजी के दर्शन

अन्य देवालयों की तरह श्रीनाथजी के दर्शन हर समय खुले नहीं रहते। श्रीनाथजी साक्षात् बाल स्वरूप होने से बालक को प्रातः उठाने से लेकर शयन तक पृथक् पृथक् भावों से रिझाना, लाड़–लड़ाना, भोग धराना, श्रृंगार कराना पड़ता है। अतः उन प्रक्रमों में प्रियजनों व भक्तों को दर्शन मिल जाते हैं। बालक पर किसी की दृष्टि न पड़े (नजर न लगे) तथा उसे असुविधा या कष्ट न हो इस भाव से दर्शन खुलने व थोड़ी–थोड़ी देर के लिए बंद हो जाते हैं। भोग के लिए एकान्त चाहिए इसलिए भी टेरा आवश्यक है।

श्रीनाथजी के मंदिर में आठ दर्शन होते हैं। इन अष्ट दर्शनों का भाव, अष्ट सखाओं द्वारा, दर्शन समय में आज भी गाया जाता है जिसमें सेवा का गूढ़ भाव निहित है।

गिरिराज पर्वत में आठ दरवाजे (कोख) हैं। प्रत्येक द्वार पर एक अष्ट सखा का स्थान है। उसी सखा द्वारा श्रीनाथजी के दर्शन का गूढ भाव, उनके साहित्य में आज भी उपलब्ध है। ये गेय पद पक्के संगीत (*Classical Music*) के रूप में है, इन्हीं भावों के अनुरूप अष्ट दर्शन का प्रावधान है।

गुसांई बालक जब भी नाथद्वारा में बिराजते हैं तब इन्हीं भावों से सेवा करते हैं। इनकी अनुपस्थिति में मुखियाजी भी उसी भाव से सेवा करते हैं। मुख्य रूप से यशोदाजी की गोद में खेलते हुए कृष्ण की सेवा की भावना है जिनकी उम्र लगभग दस वर्ष तक की है। **"यशोदोत्संग लालितः कृष्णः"** ही प्रमाण है। वात्सल्य भाव से, नंद यशोदा के भाव से बालकृष्ण की यह सेवा पद्धति मूल रूप से पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति है।

मंगला के दर्शन का भाव : नंदालय में बाल सखा व गोपीजन, बालक कृष्ण के दर्शन को आते हैं। श्रीनवनीतप्रियजी के भाव से श्रीपरमानन्ददजी कीर्तन करते हैं। सारस्वत कल्प में, दिन में तोक–सखा व रात्रि–बिहार में चन्द्र सहचरी की, श्रीनवनीतप्रियजी के दर्शन में आसक्ति थी। ग्वाल पगा के श्रृंगार में, श्रवण स्थान से प्रगट मंगला दर्शन का मुख्य भाव है। सुरभि कुंड के ऊपर श्याम तमाल के नीचे श्रीगिरिराज में इनका निवास है।

शीतकाल में ये दर्शन प्रायः सूर्योदय से पूर्व और ग्रीष्मकाल में कुछ सूर्योदय होने पर होते हैं। मंगला के दर्शन खुलने से पूर्व श्रीनाथजी को शंखनाद के साथ जगाया जाता है। बालकृष्ण की भावना से माखन, मिश्री, दूध, ठोर, हलुआ आदि का भोग धराया जाता है। ग्रीष्म में आड़बंध, शीतकाल में अंगरखा और शेष दिनों में उपरना धारण कराया जाता है। इस समय आरती होती है।

श्रृंगार के दर्शन का भाव – मंगला के दर्शन के बाद दूसरे दर्शन श्रृंगार के होते हैं। इसमें श्री गोकुलचन्द्रमाजी के दर्शन के भाव श्रीनंददासजी कीर्तन करते हैं। दिवस में भोज सखा व रात्रि विहार में नई इन्द्र सहचरी की इस दर्शन में आसक्ति है। इसमें फेंटा का श्रृंगार, लीला भाव उदर स्थान से प्रागट्य व मुख्य भाव मानसी गंगा के ऊपर, पीपल के पेड़ नीचे श्रीगिरिराजजी में निवास है।

इस समय श्रृंगार अत्यन्त मूल्यवान् और भव्य होता है एवं श्रीजी को वेणु धरायी जाती है और दर्पण दिखाया जाता है। भोग में सूखे मेवे धराये जाते हैं।

ग्वाल के दर्शन का भाव – इस तृतीय दर्शन में श्रीद्वारिकानाथजी के दर्शन का भाव श्रीगोविन्दस्वामी के कीर्तन द्वारा प्रगट होता है।

सारस्वत कल्प में दिवस में तो श्रीदामां सखा व रात्रि विहार में भामा सहचरी की आसक्ति है। इसमें टिपारा का श्रृंगार व हिंडोरा की लीला का अनुभव, नेत्रों से प्रगट है। इनका निवास कदम खंडी में, एरापत कुंड के ऊपर श्रीगिरिराजजी में है।

श्रृंगार के उपरान्त ग्वाल—बालों के साथ गोचारणार्थ गमन की भावना इन दर्शनों के मूल में है। श्रीजी को दूध, खीर आदि का भोग अरोगाया जाता है। दर्शन खुलने पर धूप—दीप होता है। उत्सवादि पर प्रायः ये दर्शन नहीं होते हैं।

राजभोग के दर्शन का भाव – इस चतुर्थ दर्शन में श्रीनाथजी के दर्शन का भाव है तथा श्रीकुंभनदासजी कीर्तन करते हैं। दिवस लीला में अर्जुन सखा व रात्रि विहार में बिसारवा सहचरी की इस दर्शन में आसक्ति है। इसमें कूल्हे का श्रृंगार व निकुंज लीला का अनुभव, हृदय स्थान से प्रागट्य है। आन्योर में सद्दूपांडे के नीम के वृक्ष के नीचे श्रीगिरिराजजी में इनका निवास है।

यह दर्शन भव्यतम होते हैं। श्रृंगार भी बहुत भारी और मूल्यवान् होता है। कुसुमहार (माला) धराने के बाद ये दर्शन खुलते हैं। ये दर्शन देवाधिदेव श्रीनाथजी के भाव से हैं। आरती की जाती है। सखड़ी, अनसखड़ी सभी प्रकार का भोग अरोगाया जाता है, जिसमें स्वादिष्ट, पौष्टिक—पवित्र पकवानों में लड्डू, बासुन्दी, पूड़ी, खीर, आम्ररस आदि का समावेश होता है। राजभोग के उपरान्त श्रीजी का अनोसर होता है और पटबन्द हो जाते हैं। यह प्रभु के विश्राम का समय माना जाता है।

उत्थापन के दर्शन का भाव – संध्याकालीन इस झांकी में श्रीमथुरेशजी दर्शन देते हैं और श्रीसूरदासजी कीर्तन गाते हैं।

सारस्वत कल्प में दिवस में कृष्ण सखा व रात्रि विहार में चंपकलता की इस दर्शन में आसक्ति है। पाग का श्रृंगार व मानलीला का अनुभव तथा मुखारबिन्द में से प्रागट्य है। सघन कंदरा परासोली में चंद्र सरोवर के ऊपर श्रीगिरिराजजी में निवास है।

यह सायंकाल के प्रथम दर्शन है। लगभग 3.30 बजे शंखनाद के द्वारा भगवान् को जगाया जाता है। विभिन्न प्रकार के फल–फूल और दूध की बनी सामग्री का भोग लगाया जाता है।

भोग के दर्शन का भाव : इस समय श्रीगोकुलनाथजी दर्शन देते हैं व श्रीचतुर्भुजदासजी कीर्तन करते हैं। सारस्वत कल्प में दिवस में सुबाहु सखा व रात्रि विहार में सुशीला सहचरी की आसक्ति है। इसमें सेहरा का श्रृंगार, अन्नकूट की लीला का अनुभव हृदय स्थान में से प्रागट्य है। रुदन कुंड के ऊपर आवली के पेड़ के नीचे नवा कुंड के पास श्रीगिरिराजजी में निवास है।

'उत्थापन' के लगभग एक घंटे बाद भोग के दर्शन होते हैं। श्रीनाथजी के समक्ष एक छड़ीदार, सोने की छड़ी लेकर मुगलकालीन वेश–भूषा में खड़ा रहता है। गर्मी में इस समय फव्वारे चलते हैं, जाड़ों में अंगीठी रहती है। मौसम अनुकूल होने पर फूलों का श्रृंगार, फूलों का बंगला आदि सेवा होती है। इस समय भोग अधिक मात्रा में रहता है जिसमें फल–फूल, ठोर आदि की प्रधानता रहती है।

सन्ध्या आरती के दर्शन का भाव – इस समय श्रीविट्ठलनाथजी दर्शन देते हैं और श्रीछीतस्वामी कीर्तन करते हैं। सारस्वत कल्प में दिवस में सुबल सखा व रात्रि विहार में पद्मा सहचरी की इस दर्शन में आसक्ति है। श्रृंगार दुमालों, श्रीगुंसाईजी की जन्मलीला का अनुभव है। दर्शन का मुख्य भाव अपछरा कुण्ड के ऊपर श्याम तमाल के नीचे श्री गिरिराजजी में निवास है।

भगवान् श्रीकृष्ण गोचारण के उपरान्त वन से पुनः घर लौटते हैं। मां यशोदा अपने पुत्र की आरती उतारती है, यही भाव इन दर्शनों में है। आरती दर्शन के उपरान्त श्रीजी का श्रृंगार हल्का कर दिया जाता है और भोग आता है। चक्रराज सुदर्शन को भी भोग लगाया जाता है और ध्वजाएं दंड से लपेट दी जाती है।

शयन के दर्शन का भाव : इस आठवें व अंतिम दर्शन में, श्रीमदनमोहनजी के स्वरूप के भाव का कीर्तन श्रीकृष्णदासजी अधिकारीजी करते हैं। दिवस में ऋषभ सखा व रात्रि विहार में ललिता सहचरी की स्वरूपासक्ति है। इसमें मुकुट का श्रृंगार व रासलीला का अनुभव, चरण स्थान से प्रागट्य है। मुख्य भाव बिलछू कुण्ड के ऊपर श्याम तमाल व कदम्ब के वृक्ष के नीचे श्रीगिरिराजजी में निवास है।

ये दर्शन सर्वदा नहीं होते। दशहरे से मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी तक और बसंत पंचमी से संवत्सर अथवा रामनवमी तक बाहर खुलते हैं। मार्गशीर्ष शुक्ल 7 से बसंत पंचमी के एक दिन पूर्व तक भीतर होते हैं, तथा रामनवमी से दशहरे तक एकदम बंद हो जाते हैं। इन दर्शनों में आरती होती है, प्रभु पान अरोगते हैं। सखड़ी–अनसखड़ी आदि नाना प्रकार की सामग्री का भोग लगाया जाता है।



34. वैष्णवजन के लिए संक्षिप्त जानकारी

1. मंदिर में सामान्यतः प्रतिदिन आठ दर्शन होते हैं। गर्मियों में दर्शनों की संख्या 7 होती है।
2. नक्कारखाना दरवाजा, प्रीतमपोली दरवाजा, मोतीमहल दरवाजा एवं मंदिर मण्डल के कॉटेजेज एवं धर्मशालाओं में दर्शन खुलने का समय दर्शाया जाता है।
3. समाधान विभाग द्वारा वैष्णवजन द्वारा मनोरथ हेतु राशि जमा करायी जाकर विभिन्न मनोरथ यथा राजभोग, मंगलभोग, शयनभोग, दिनभर का मनोरथ आदि कराये जाने पर वैष्णवों को दर्शन–पास एवं प्रसाद व उपरना आदि की सुविधा प्राप्त होती है।
4. इसके अतिरिक्त एक भेंट काउण्टर समाधान विभाग पर एवं दूसरा भेंट काउण्टर श्रीकृष्ण भण्डार के बाहर (सोना–चांदी की चक्की के पास) है, जहां पर न्यूनतम 15/– रु. से 576/– रु. की भेंट जमा करायी जा सकती है एवं प्रसाद प्राप्त किया जा सकता है।
5. मंदिर परिसर में विभिन्न स्थानों यथा कीर्तनियागली, कमल चौक, आरती के यहां, गोवर्द्धनपूजा चौक, नवनीतप्रियजी का मंदिर, श्रीकृष्ण भण्डार, सुदर्शन चक्रजी के यहां गोलख लगा

रखी है, जहां वैष्णव कोई भी भेंट अथवा सोने–चांदी–जवाहरात के चीजें पधरा सकते हैं।

6. मंदिर में ध्रुव बारी किसी भी प्रकार की मान्यता हेतु महत्वपूर्ण स्थान है।

7. मंदिर में नारियल पधराने हेतु समाधान विभाग पर नारियल काउण्टर उपलब्ध है जहां से न्योछावर से नारियल प्राप्त कर ध्रुव बारी पर मान्यता पूरी की जा सकती है।

8. **मंदिर में दर्शन के पास हेतु किसी भी प्रकार की राशि किसी को नहीं दी जावे।** किसी मनोरथ के कराने पर समाधान विभाग से दर्शन पास स्वतः प्राप्त हो जाता है।

9. किसी भी प्रकार का मनोरथ, भेंट, गौमाताजी के हरा घास, घास, थूली एवं गौमाताजी भेंट किये जाने हेतु समाधान विभाग पर समाधानीजी से सम्पर्क किया जा सकता है।

10. श्रीजी व प्रियाजी में किसी भी प्रकार के सोना–चांदी, हीरे–जवाहरात के आभूषण धारण कराने के सम्बन्ध में समाधान विभाग, गहणाघर व श्रीकृष्ण भण्डार में सम्पर्क किया जा सकता है।

11. श्रीजी व प्रियजी में वस्त्रधारण कराये जाने की सेवा हेतु मुखियाजी, समाधानीजी श्रीकृष्ण भण्डार व दर्जीखाना (गोवर्द्धन पूजा चौके ऊपर) पर सम्पर्क किया जा सकता है।

12. श्रीजी व प्रियाजी में विभिन्न प्रकार की सेवा सामग्री अर्थात् सूखा मेवा, घृत, शक्कर, चावल, दाल आदि पधराने हेतु प्रीतमपोली एवं खर्च भण्डार के पास जिन्स भेंट काउण्टर संधारित है जहां उक्त भेंट जमा करा रसीद प्राप्त की जा सकती है, जिस पर वैष्णव को नियमानुसार प्रसाद देय होता है।

13. मंदिर में किसी प्रकार की भेंट जमा कराने पर रसीद अवश्य प्राप्त की जानी चाहिये। बिना रसीद के कोई भी भेंट अथवा राशि किसी को न दें।

14. मण्डल में 'श्रीजी दर्शन' योजना के तहत एक बार नियत राशि जमा करवाकर वर्ष में एक नियत तिथि को नियत मनोरथ करवाया जा सकता है, जिस पर सुविधाजनक आवास एवं दर्शन व्यवस्था उपलब्ध है एवं नियत प्रसाद प्राप्त किया जा सकता है।

15. मनी–ऑर्डर, बैंक ड्राफ्ट, मनी ट्रांसफर के जरिये भेंट राशि नाथद्वारा मंदिर मण्डल, नाथद्वारा के नाम 'मुख्य निष्पादन अधिकारी' के नाम भिजवाया जा सकता है, जिस पर नियमानुसार प्रसाद एवं पहुंच देय है।

16. देश के किसी भी कोने से जहां आईसीआईसीआई बैंक उपलब्ध है, नाथद्वारा मंदिर मण्डल के बचत खाता सं. 004501014021 में भेंट, मनोरथ आदि हेतु राशि जमा करायी जा सकती है।

17. किसी भी प्रकार की भेंट राशि जमा कराने पर आयकर अधिनियम की धारा '80 *G*' के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

18. मंदिर मण्डल अन्तर्गत नाथद्वारा में आवासीय सुविधा प्राप्त करने/कॉटेजेज में अग्रिम आरक्षण कराने हेतु केन्द्रीय पूछताछ एवं आरक्षण कार्यालय में सम्पर्क किया जा सकता है, जिसका टेलीफोन नम्बर 02953–233677 है। आवासीय व्यवस्थाओं के अन्तर्गत न्यू कॉटेजेज के टेलीफोन नम्बर 233485 है।

19. धर्मशालाओं में अग्रिम आरक्षण की आवश्यकता नहीं है। उपलब्धता के आधार पर आवास सुविधा उपलब्ध करवा दी जाती है।

20. किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नांकित पते पर सम्पर्क किया जा सकता है –

मुख्य निष्पादन अधिकारी,
नाथद्वारा मंदिर मण्ड़ल,
नाथद्वारा (राजस्थान) 313 301
फोन : 02953–230082, 233335, 233484
टेलीफेक्स : 02953–232482
मोबाईल : 98290 40015
ई–मेल : *ceotbn@gmail.com*



35. महत्वपूर्ण टेलीफोन नम्बर

जिलाकलक्टर, राजसमन्द	(02952) 220536
जिला पुलिस अधीक्षक	(02952) 220563
मुख्य निष्पादन अधिकारी	(02953) 232482, 230082
प्रबन्धक (प्रशासन)	233335
प्रबन्धक (वित्त)	233678
खास दफ्तर मोतीमहल	234480
मुख्य सचिव, महाराजश्री	230981
श्रीकृष्ण भण्डार	233484
खर्च भण्डार	234486
न्यू कॉटेज	233485
आरक्षण विभाग	233677
क्रय विभाग	232985
उप खण्ड अधिकारी	231855
उप पुलिस अधीक्षक	231885
सहा. अभियंता, विद्युत विभाग	234673
कम्पलेन ऑफिस (विद्युत विभाग)	234256
सहा. अभियन्ता जलदाय विभाग	231884
सहा. अभियन्ता सा.नि. विभाग	233530
अधिशासी अधिकारी, नगरपालिका	233537
दूरसंचार विभाग	234100
रोडवेज	234266
चिकित्सालय	230365

37. सम्पर्क सूत्र

कार्यालय मुख्य निष्पादन अधिकारी, मंदिर मण्डल नाथद्वारा प्रशासनिक कार्यालय
फोन : 02953–232482, 230082, फैक्स : 02953–232482
E-mail <ceotbn@gmail.com>

भण्डारी, श्रीकृष्ण भण्डार (मंदिर परिसर) 02953 : 234484
पूछताछ एवं आरक्षण कार्यालय 02953 : 233677
न्यू कॉटेज आवासीय परिसर 02953 : 233485
भण्डारी, श्रीनाथजी भण्डार, श्रीनाथजी की हवेली, उदयपुर 0294–2418352
भण्डारी, श्रीनाथजी भण्डार, तीसरा भोईवाडा, भुलेश्वर, मुम्बई 022–22421805
भण्डारी, श्रीनाथजी भण्डार, 27, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट,
बासतल्ला, कलकत्ता–700007 033–22749957
भण्डारी, श्रीनाथजी भण्डार, कीर्ति मंदिर के पास,
माणक चौक, पोरबन्दर–360575 0286–2244511
भण्डारी, श्रीनाथजी भण्डार, पारखजी का बगीचा, श्योपुर कला,
जिला मुरैना (म.प्र.) 07530–221048
भण्डारी, महाप्रभुजी की बैठक, अश्विनीकुमार मोदी मोहल्ला, सूरत–20261–2547968
भण्डारी, श्रीनाथजी भण्डार, दाउजी का मंदिर, मणिकर्णिका घाट
मकान नं. 8/2, सी.के., बनारस (उ.प्र.)
भण्डारी, श्रीनाथजी भण्डार, रामघाट–श्यामघाट, मथुरा (उ.प्र.) 0565–2400015
भण्डारी, श्रीनाथजी भण्डार, दरबारगढ़ के पास, रेतवाली वार्ड, कोटा 0744–2385354
श्री मुनीम, श्रीनाथजी भण्डार, सेन्ट्रल बैंक के पीछे,
महालक्ष्मी चौक, जामनगर (सौराष्ट्र) 0288–2542884

दर्शनों का समय

ऋतु	मंगला	श्रृंगार	ग्वाल	राजभोग	उत्थापन	भोग	आरती	शयन
ग्रीष्म	6.00	7.15	8.15	11.00	3.15	4.15	5.50	—
शरद	5.00	6.30	7.15	10.30	3.30	4.30	5.15	7.00

नाथद्वारा पहुंच

उदयपुर एयरपोर्ट से : 50 किलोमीटर उदयपुर से :5 0
किलोमीटर
जयपुर से : 300 किलोमीटर अजमेर से : 220 किलोमीटर
अहमदाबाद से : 300 किलोमीटर मुम्बई से : 880 किलोमीटर
जोधपुर से : 255 किलोमीटर

38. आवेदन का प्रारूप

श्रीमान् मुख्य निष्पादन अधिकारी

मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

विषय : '**श्रीजी दर्शन**' योजना में सहभागिता बाबत् ।

महोदय,

विषयान्तर्गत निवेदन है कि '**श्रीजी दर्शन**' योजना में मैं भी सेवा सहभागिता करते हुए श्री/श्रीमती.. पुत्र/पत्नी .... के नाम से मनोरथ करना चाहता हूं। इस हेतु दिनांक/मिति को.................... प्रतिवर्ष...........................मनोरथ हेतु मैंने संकल्प किया है। अतः संलग्न राशि मुख्य निष्पादन अधिकारी, मन्दिर मण्डल नाथद्वारा के पक्ष में देय राशि .... रु. का डिमाण्ड ड्राफ्ट/बैंकर्स चेक क्र.................... दिनांक......................संलग्न कर प्रेषित है।

कृपया मेरी सदस्यता अनुमोदन करवा मुझे सनद तथा पास भिजवाने की कृपा करावें।

दिनांक : भवदीय

(हस्ताक्षर)

नाम : ....

पिता/पति का नाम : ....

पता : ....

फोन : ....(कार्यालय) फोन : .... (निवास)

फेक्स : ....ई–मेल : ....

ब्रह्मवाद के सूत्र

(१) "ब्रह्म सर्वज्ञ है"

(२) "जीव अल्पज्ञ, अणु और ईश्वर का ही अंश है"

(३) "ब्रह्म अपरिमेय और अज्ञेय है, दुर्गम्य भी है किन्तु अनुग्रहैक गम्य भी वही है"

(४) "ब्रह्म सर्व धर्मों का केन्द्र है"

(५) "ब्रह्म सर्व सामर्थ्य सम्पन्न ईश्वर है और वही परमतत्व भगवान् श्री कृष्ण ही है"

(६) "ब्रह्म सर्व विरूद्ध धर्मों का आश्रय है"

(७) "ब्रह्म निर्दुष्ट है"

(८) "ब्रह्म सर्व सद्गुण संयुक्त है"

"कृष्णात्परं नास्ति दैवं वस्तुतो दोष वर्जितम्"

महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य

क्र.	पू. तिलकायितो के नाम की वंशावली	जन्म			लीला संवरण			[illegible]
		संवत्	मास	दिवस	संवत्	मास	तिथि	
1.	श्री आचार्य श्री महाप्रभु जी (श्री वल्लाभाचार्य जी)	1535	वैशाख	कृ. 11	1587	आषाढ़	शु. 3	श्रीनाथ जी का प्राकट्य होने पर मन्दिर बनवाकर सेवा व्यवस्था की। 1576 वै.सुदी 3 अक्षय तृतीया नवीन मन्दिर में पाट बिठाया।
2.	श्री गोपीनाथ जी	1567	आश्वि.	कृ. 12	1599	-	-	आपश्री का प्रारम्भिक अध्ययन श्री वल्लभ के चरणारविन्द में हुआ, श्री वल्लभाचार्य के लीला प्रवेश पश्चात् आप आचार्य पदवी पर मात्र तीन वर्ष बिराजे। श्रीनाथ जी की सेवा बंगाली सेवकों से हटाकर सांचीहर ब्राह्मणों को श्रीनाथ जी की सेवा प्रदान की। श्री गोपीनाथ जी को श्रीजगदीश ने हाथ पकड़कर लीला में ले लिया तथा श्री बलदेव जी के मुखारविन्द में लीन हो गये।
3.	श्री गुंसाई जी (श्री विट्ठलनाथ जी)	1572	पौष	कृ. 9	1642	माघ	कृ. 7	श्रीनाथजी की सेवा व्यवस्था बांध कई नवीन उत्सव किये। मेवाड़ महाराणा उदयसिंह के समय श्री गुसांईजी सिंहाड़ (नाथद्वारा) अपने अनन्य सेवक चाचा हरिवंश के साथ पधारे।

क्र.	पू. तिलकायितो के नाम की वंशावली	जन्म			लीला संवरण			विशेष
		संवत्	मास	दिवस	संवत्	मास	दिवस	
4.	श्री पुरूषोत्तम	1588	आश्वि.	कृ. 9	1606	-	-	श्रीपुरुषोत्तम जी गिरिराज की कन्दरा में पधारे ओर श्रीजी ने आपका हाथ पकड़कर सदेह अपनी लीला में अंगीकार कर लिया। श्री पुरुषोत्तम जी का व्यक्तित्व अलौकिक था, अल्पावस्था में ही आप नित्यलीला में पधारे गये। कतिपय प्रमााणों के अनुसार आपके पितृ चरण के लीलास्थ होने के पश्चात् आपका लीला विस्तार हुआ।
5.	श्री गिरधर जी	1597	कार्तिक	शु.12	1677	पौष	कृ.2	श्री नाथ जी को मथुरा सतधरा में पधराये। 1623 फा.व. 7 गुरूवार।
6.	श्री दामोदर जी	1632	श्रावण	शु. 15	1694	कार्तिक	सु. 10	आप वेद वेदान्त के निष्णात विद्वान् थे। सकल शास्त्रों का आपने गम्भीर अध्ययन किया था। श्रीमद्वल्लभाचार्य के सम्पूर्ण संस्कृत वाड्गमय का आपने अनुशीलन किया था। वल्लभ-दर्शन के आप श्रेष्ठ प्रणेता थे।

क्र.	पू. तिलकायितो के नाम की वंशावली	जन्म			लीला संवरण			विशेष
		संवत्	मास	दिवस	संवत्	मास	दिवस	
7.	श्री विट्ठलेशराय जी	1657	श्रावण	शु. 14	1711	पौष	कृ. 9	आपका प्रारम्भिक जीवन संघर्षमय रहा। प्रभु श्रीनाथजी की आप पर पूर्ण कृपा थी तथा आपके मस्तक पर श्रीहस्तरखा था मुगल सम्राट ने आपको अतीव सम्मान प्रदान किया।
8.	श्रीलाल गिरधरजी	1689	वैशाख	शु.7	1723	श्रावण	शु. 1	आप दैवी सम्पदा के गुणों से युक्त, महान् आचार्य थे, क्षमाशीलता अन्तःकरण की निर्मलता, कष्ट, सहिष्णुता सात्विकता समस्त प्राणियों के प्रति दयालुता आदि गुण आपमें विद्यमान थे। संगीतज्ञ के साथ आप कवि थे, आपने अनेक पदों की रचना की।
9.	श्री दामोदर जी (बड़े दाऊजी) प्रथम	1711	माघ	कृ.8	1760	-	-	श्रीनाथजी को मेवाड़ पधराये एवं वर्तमान मन्दिर में श्रीजी को पधराया नाथद्वारा नगर की सर्वप्रथम नींव आपने ही रखी।

क्र.	पू. तिलकायितो के नाम की वंशावली	जन्म			लीला संवरण			विशेष
		संवत्	मास	दिवस	संवत्	मास	दिवस	
10.	श्री विट्ठलेशराय जी	1743	भाद्रपद	शु. 6	1793	कार्तिक	-	मेवाड़ में जन्म लेने वाले प्रथम आचार्य तथा नाथद्वारा मन्दिर की व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने वाले थे।
11.	श्री गोवर्द्धनेश जी	1763	श्रावण	कृ.10	1819	माघ	कृ. 7	सात स्वरूप का उत्सव व छप्पभोग किया। आपने अपने जन्म दिवस के उपलक्ष में श्रीनाथजी में हांड़ी उत्सव प्रारंभ किया।
12.	श्री गोविन्द जी	1769	पौष	कृ.11	1830	ज्येष्ठ	शु. 6	श्री गोवर्द्धनेशजी के कोई पुत्र नहीं होने से लघुभ्राता श्री गोविन्दजी तिलकायित बने।

क्र.	पू. तिलकायितो के नाम की वंशावली	जन्म			लीला संवरण			विशेष
		संवत्	मास	दिवस	संवत्	मास	दिवस	
13.	श्री बड़े गिरिधर जी	1825	आषाढ़	कृ. 30	1893	वैशाख	शु. 11	माघ कृ. 10 वि.सं. 1858 में श्री नाथ जी को घसियार पधराये, घसियार से पूर्व आपने श्रीनाथजी एवं श्री नवनीतप्रिय जी को कुछ समय उदयपुर पधराये स्नान की सुविधा के लिए गिरधर सागर की नींव डाली।
14.	श्री दाऊ जी (द्वितीय)	1853	अश्विन	शु. 4	1882	फाल्गुन	कृ. 30	सात स्वरूप का उत्सव व छप्पभोग किया। आपने अपने प्रथम जन्म दिवस पर श्रीनाथ जी में हांडी उत्सव किया।
15.	श्री गोविन्द जी	1877	कार्तिक	शु.14	1902	फाल्गुन	कृ. 12	आप द्वितीयपीठ श्री विट्ठलनाथ जी के घर से गोद आये।

क्र.	पू. तिलकायितो के नाम की वंशावली	जन्म			लीला संवरण			विशेष
		संवत्	मास	दिवस	संवत्	मास	दिवस	
16.	श्री गिरिधारीजी	1899	ज्येष्ठ	शु.13	1959	वैशाख	शु. 14	आपने सम्वत् 1917 में मोतीमहल बनवाया मौवागढ़ एवं नृसिंह बंकट व्यायाम शाला का निर्णाण कराया गांवों में गौ शाला बनवाई।
17.	श्री गोवर्द्धनलाल जी	1919	भाद्रपद	कृ.1	1990	आषाढ़	शु. 2	आपने कछवाई का नाला झरनाकुण्ड तथा अन्य कुण्डों का निर्माण कराया, नाथूवास का तालाब खुदवाया सिंहाड़ का तालाब बड़ा करवाया गोवर्धन कुण्ड की नींव रखी। आपने ही गोवर्धन चिकित्सालय गोवर्धन औषधालय एवं श्रीविद्या विभाग की स्थापना की और अन्य कई जनहित के कार्य किये। आपका कार्यकाल स्वर्णयुग था।
18.	श्री दामोदरलाल जी	1953	पौष	शु. 6	1992	श्रावण	शु. 15	आपने बनारस जलगांव जैसी विद्वत्सभाओं में सम्मान पाया आप क्रिकेट के भारत प्रसिद्ध खिलाड़ी थे।

क्र.	पू. तिलकायितो के नाम की वंशावली	जन्म			लीला संवरण			विशेष
		संवत्	मास	दिवस	संवत्	मास	दिवस	
19.	श्री गोविन्दलाल जी	1984	मा.शी.	कृ.7	2051	माघ	कृ.4	आपने श्रीनवनीतप्रिय जी को श्री विट्ठलनाथ जी में पधराया तथा छप्पभोग किया तथा सात स्वरूप का उत्सव किया। आपने गोविन्द विद्यालय, गोविन्द पुस्तकालय, गोविन्द वाचनालय, राष्ट्रीय विद्यापीठ सार्वजनिक उद्यान, साहित्य मण्डल, गोविन्दपुरा, वल्लभपुरा, कृष्णकुण्ड, कन्याशाला, साधु सम्मेलन के कार्य किये।
20.	श्री दाऊजी (श्रीराजीव जी)	2005	पौष	कृ.1	2056	चैत्र	कृ. 10	आपश्री ने लालन का सुख विचार करते हुए अनेक मनोरथ किये, आपश्री ने लालन को लालबाग में पधराकर श्रावण मास में हिंडोरा के मनोरथ किये, कछवई में श्री मदन मोहनलाल जी एवं श्री द्वारिकाधीशजी (कांकरोली) कुंजफाग खेल का मनोरथ किया एवं मोतीमहल में लालछात पर लालन को पधराये।

क्र.	पू. तिलकायितो के नाम की वंशावली	जन्म			लीला संवरण			विशेष
		संवत्	मास	दिवस	संवत्	मास	दिवस	
21.	श्री राकेश जी (इन्द्रदमन जी)	2006	फाल्गुन	शु. 7	-	-	-	विक्रम संवत् 2057 आषाढ़ शुक्लपक्ष 6 (कसूंभी छट्ठ) को आप श्री का आचार्य पर पर तिलकोत्सव सम्पन्न हुआ। सम्वत् 2058 अधिक मास में श्री नवनीतप्रिय जी को गौशाला में पधराकर अलौकिक मनोरथ किया। ज्येष्ठ कृष्ण 10 रविवार को अमरीका में श्री व्रजराज जी का स्वरूप उत्तरी अमरीका पेनसिलबेनिया व्रजस्थान में वि.सं. 2060, 25 मई सन् 2002 को पधराया।
22.	चि. श्री भूपेशकुमार जी (विशाला बाबा)	2037	पौष	कृ. 30	-	-	-	पू. आ. व. ति. गो. श्री 108 श्री राकेश जी महाराज श्री के सुयोग्य पुत्र रत्न है। आप तेज संपन्न, कुशाग्र बुद्धि, विलक्षण प्रतिभा, मृदुभाषी तथा उदीयमान भास्कर के रूप में आप श्री को देखा जा रहा है।

चि.गो. श्री 105 श्री भूपेश कुमार जी
(श्री विशाल बावा)





चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. - 0294-2584071, 2485784 / 2681